UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 12 | युगाब्द - 5125 | विक्रम संवत् - 2080 | सितम्बर - 2023

मूल्यः 12

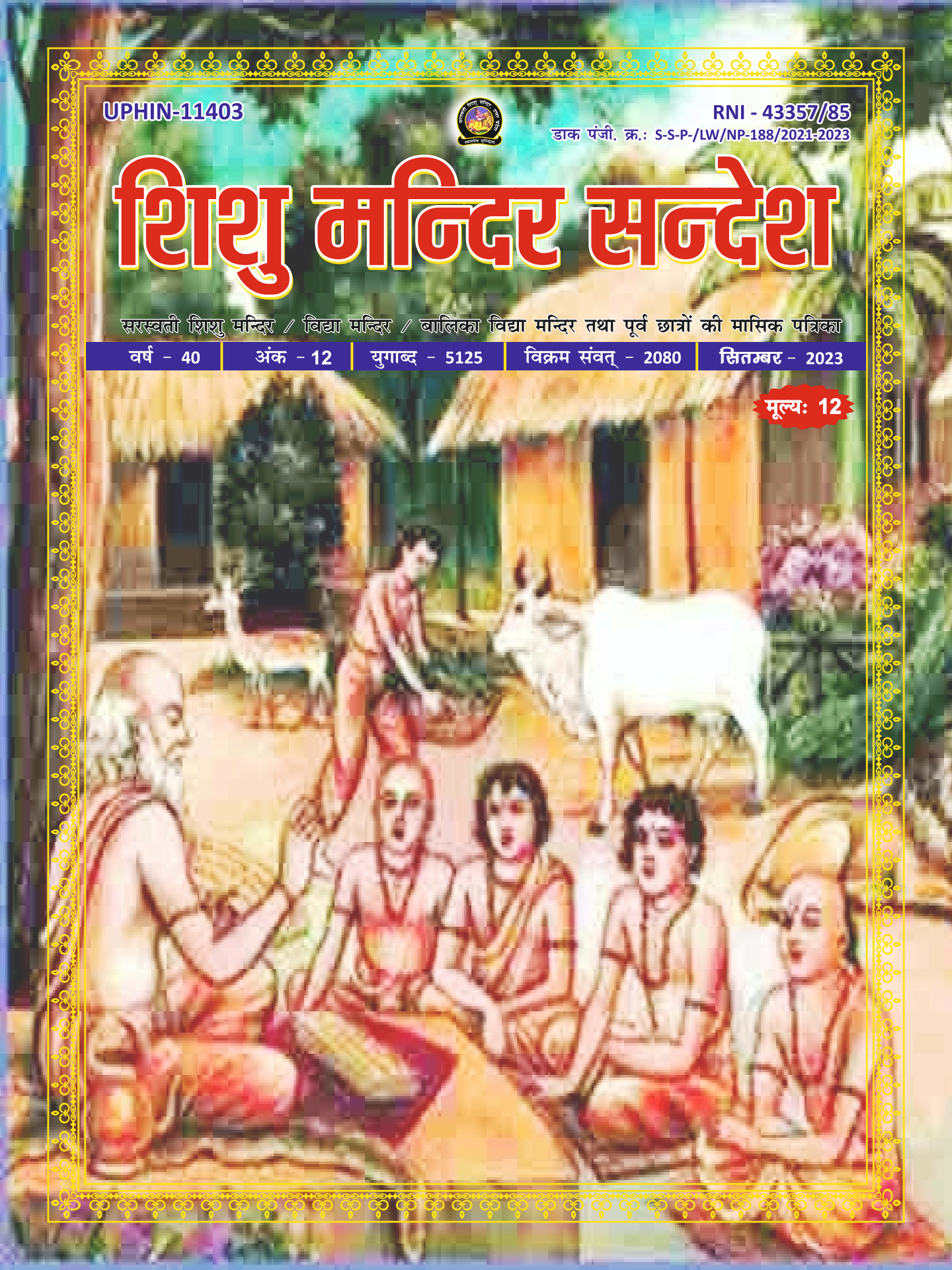

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

संकल्प

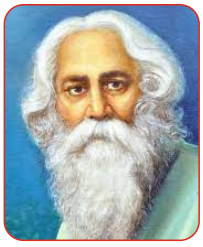

जब गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर अस्वस्थ रहने लगे तो डॉक्टरों ने सलाह दी कि दो दिन में भोजन के बाद कुछ समय विश्राम अवश्य करें, अन्यथा स्वास्थ्य गिरता चला जायेगा। लेकिन वे डॉक्टरों की सलाह दर किनार कर सारा दिन काम में व्यस्त रहते थे। एक दिन महात्मा गाँधी शान्ति निकेतन आए। कार्यकर्ताओं ने सोचा कि क्यों न गाँधी जी से कहा जाए कि वे उन्हें कुछ समय आराम के लिए कहे। कार्यकर्ता गाँधी जी के पास जाकर बोले, बापू आप जरा गुरूदेव से कहे कि वे दिन में भोजन के उपरान्त कुछ समय विश्राम अवश्य करें। वे आपकी बात टालेगें नहीं। गांधी जी गुरूदेव के पास जाकर बोले–गुरूदेव आज आपको हमारी एक बात माननी ही होगी कि दिन में आप भोजन के बाद कुछ समय विश्राम अवश्य करें। नहीं तो आपका स्वास्थ्य गिरता ही जायेगा। गुरूदेव ने सहज भाव से उत्तर दिया–बापू जब मेरा यज्ञोपवीत संस्कार हुआ मैंने तभी संकल्प लिया था कि दिन में कभी विश्राम नहीं करूंगा। आज तक मैंने यह संकल्प टूटने नहीं दिया। अब आप ही बताएं कि इस उम्र में अपना संकल्प कैसे तोड़ दूँ। गाँधी जी निरूत्तर हो गये।

"मनुष्य के गुण और गौरव तभी तक सुरक्षित रहते है जब तक वह दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाता।।"

अपनी बात

प्रत्येक मनुष्य को अपनी सीमा के बाहर आकर असीम की ओर बढ़ना है। यह तथ्य अब निर्विवाद है कि मनुष्य के अन्तःकरण एवं मन में असीमित संभावनाएँ छिपी रहती हैं, जिनका विकास किया जाना अत्यावश्यक है। जो हमारे अन्दर है उसी की अभिव्यक्ति बाहर होती है। ज्ञान अपनी सम्पूर्णता में सबके भीतर स्थित है, जो अज्ञान के पर्दे से आवृत है, जिसे अनावृत किया जाना है। इस अनावरण का प्रयास ही शिक्षा है। जैसे–जैसे अज्ञान का पर्दा हटता जायेगा वैसे–वैसे ज्ञान स्वतः प्रतिभासित होता जाएगा। जो कुछ एक में अर्थात् पिण्ड में व्याप्त है, वही सब में अर्थात् ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। मनुष्य नामों, रूपों, रंगों से संसार में बँटा हुआ प्राणी नहीं है। करोड़ों मानवों में एक ही आत्मतत्त्व स्पन्दित रहता है। हम सब एक हैं, हम सब अद्वितीय हैं। इस अद्वितीयता की शिक्षा बचपन से ही दी जानी चाहिए। 'मैं पूर्ण हूँ', यह विश्वास प्रत्येक बच्चे में दृढ़ किया जाना चाहिए। मानवेतर जीव–जन्तु एवं पशु पक्षी आदि अपने निहित गुण धर्मों के अनुरूप स्वतः विकासशील रहते हैं, किन्तु अप्राप्त को प्राप्त करने, अनदेखे को देखने तथा असंभव को संभव बनाने की आकांक्षा रखना और उस हेतु तत्पर होना केवल मानव में दिखायी देता है मानव जीवन पूर्णता में निहित होता है। पूर्णता का अर्थ है सभी बन्धनों, सभी सीमाओं तथा सभी भयों आदि का नाश। सभी इच्छाओं, आकांक्षाओं की समाप्ति कर पूर्ण काम होना और सभी दुःखों से निवृत्ति पाकर परम सुख प्राप्त करना।

हमें ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे शिशु को मन की एकाग्रता तथा आत्मविश्वास प्राप्त हो। इसके लिए चरित्र गठन,ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है। हमारी प्राचीन शिक्षा अधिक तर्कसंगत थी, क्योंकि वह सम्पूर्ण मानव–परिवेश अर्थात् प्रकृति को देखने–परखने तथा उनकी संरक्षा करने हेतु शिशु को अभिप्रेरित कर अभिप्रेरित करती थी। आज कितनी ही अनपेक्षित विषय सामग्री बच्चे के मन–मस्तिष्क पर थोपी जा रही है। हम यह भुला बैठे हैं कि शिशु की खोजी निगाहें स्वतः बहुत पैनी हैं। शिशु बाह्य परिवेश का संस्कार तुरन्त आत्मसात् कर लेता है। अभिमन्यु और प्रह्लाद ने तो गर्भावस्था में ही अपने संस्कार दृढ़ कर लिए थे। हमारा कार्य बालक में अपने परिवेश और प्रकृति के प्रति रुचि उत्पन्न कर, उसे सूक्ष्म निरीक्षण कर आत्मसात् करवाना है। वह किस प्रकार एकाग्रता तथा आत्मविश्वास का अर्जन करे, यही उसे बताना है।

प्रारंभिक शिक्षा बालक की मातृभाषा में ही दिया जाना आवश्यक है क्योंकि वह मातृत्व का निकटतम लाभार्थी है। माता ही उसकी गुरु, सखा, सहायक तथा सर्वस्व होती है। अतः उसकी अभिरुचियों के अनुसार उसका निरीक्षण, तुलना, स्मृति, कल्पना तथा निर्णय लेने की शक्तियों को हमें विकसित करना है।

डॉ .राधाकृष्णन एवं शिक्षक का सम्मान, स्वदेशी–राष्ट्रभक्ति परक गीत,परस्पर एक दूसरे को रक्षासूत्र बांध कर प्रेमकी अभिव्यक्ति कर रक्षा संकल्पों की मंगलमय कामनाओं के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

वर्तमान भारतीय शिक्षा में परिवर्तन की दिशा

– लज्जाराम तोमर

प्रत्येक राष्ट्र का भविष्य उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर है। हम किसी भी देश के आज के विद्यार्थी को देखकर सहज अनुमान लगा सकते हैं कि इस इस देश के कल के नागरिक कैसे होंगे। भारतीय जनमानस आज जिस विनाश की कगार पर आ खड़ा हुआ है, वह कोई अचानक घटने वाली घटना नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब विदेशी शिक्षा प्रणाली को हमने अपना लिया उसी क्षण वर्तमान स्थिति का बीजारोपण हो चुका था। इस विनाश की स्थिति का आना उस समय बिल्कुल निश्चित हो गया जब हमने धर्म निरपेक्ष नीति की घोषणा कर दी और उसके गलत अर्थ का व्यवहार शिक्षालयों में प्रारम्भ हो गया।

आज छात्रों के व्यवकार की सर्वत्र आलोचना की जाती है। अनेक विशेषणों से उन्हें विभूषित किया जाता है। परन्तु क्या वास्तव में हमारा छात्र समुदाय इसके लिए दोषी है ? इसके लिए एक मात्र यदि कोई दोषी है तो वह है हमारी शिक्षा पद्धति। धर्मभूमि भारत में धर्म निरपेक्ष शिक्षा की व्यवस्था करके हम प्रगतिशील बनने का दम भरते हैं और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अधार्मिकता एवं धर्म विमुखता को छात्रों में कूट–कूट कर भरा जा रहा है। परिणामतः आज का छात्र स्वार्थी एवं भ्रष्ट नागरिक बनकर विद्यालय से निकलता है। धर्म, संस्कृति एवं भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति उसके मन में विद्रोह की भावना भड़कती दिखाई देती है।

राष्ट्र को वर्तमान स्थिति से मुक्त करने का एक ही मार्ग है कि हम ऐसी शिक्षा व्यवस्था करें जो भारतीय जीवनादर्शो के अपुरूप एवं जीवनोपयोगी हो। आज विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के साथ छात्रों में स्वधर्म, स्वसंस्कृति एवं स्वदेश के प्रति सक्रिय निष्ठा एवं ज्ञानयुक्त भक्तिभाव जागृत करने की तीव्र आवश्यकता है। इसी के आधार पर अन्तःकरण में सद्गुण प्रस्फुटित होकर उनका नैतिक जीवन विकसित होगा। इसके लिए आवश्यकता है उन्हें जीवन में स्पष्ट दिशाबोध की, सत्य विचार पद्धति की श्रेष्ठ भावों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने वाले उदाहरणें की, चिंतन, मनन करने के अभ्यास की, उनके हृदय में सुप्त कोमल भावनाओं को जगाने की और राष्ट्र की अमूल्य सांस्कृतिक निधियों का ज्ञान कराने की। इसी को दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि आज आवश्यकता है उन्हें नैतिक शिक्षा की।

इसके लिए सर्वप्रथम हमें नैतिक शिक्षा की व्यवस्थित रूपरेखा एवं पाठयक्रम निश्चित करना होगा। कुछ लोगों का मत है कि नैतिक शिक्षा के पाठयक्रम की अलग से आवश्यकता नहीं है। अन्य विषयों के साथ ही इसे पढ़ाना चाहिए। उनका कहना है कि नैतिक शिक्षा का अलग से पाठ्यक्रम रखने से छात्रों पर अतिरिक्त भार लादना होगा। कुछ लोगों का तो यह भी मत है कि नैतिक शिक्षा पढ़ाने का विषय नहीं है, यह तो व्यवहार का विषय है। ये दोनों ही मत अपूर्ण हैं। इनका यह अंश तो मान्य है कि अन्य विषयों के साथ ही नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए तथा इसका व्यावहारिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार अच्छे स्वास्थ्य के लिए संतुलित भोजन एवं व्यायाम के नियमों के अज्ञान के कारण अनेक दुष्परिणामों को भुगतना पड़ता है उसी प्रकार नैतिक शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष को कम महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता।

आज जबकि हमारी शिक्षा पद्धति दोषपूर्ण

सिद्ध हो चुकी है, परिवार संस्था नष्टप्राय सी है, समाज विदेशी वैचारिक आक्रमणों से ग्रस्त है इस विषम परिस्थिति में हमारे छात्रों का जीवन बिना पतवार के ऐसी नौका के समान बना हुआ है जिसकी दिशा लहरों के थपेड़ों पर निर्भर है, तब आज भारतीय नीति शास्त्र के पठन–पाठन की अत्यधिक आवश्यकता है। इसके लिए भारतीय शाश्वत जीवन मूल्यों एवं वर्तमान युग की वैज्ञानिक उपलब्धियों के समन्वय पर आधारित नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं व्यस्थित शिक्षण की परम आवश्यकता है। विश्व के प्रायः प्रत्येक देश में प्राथमिक से विश्वविद्यालयीन स्तर तक के छात्रों के लिए नैतिक शिक्षा व्यवस्थित पाठ्यक्रम के आधार पर दी जाती है। इंग्लैण्ड, अमेरिका तथा जापान आदि देशों में प्रतिदिन एक घंटा तथा साम्यवादी देश रूस में दो घंटे के लिए विद्यालय के दैनिक कार्यक्रम में निर्धारित है।

यहाँ एक बात स्पष्ट समझ लेना आवश्यक है कि कुछ शब्दावलियाँ बाह्यरूप से भले ही समान दिखाई देती हों परन्तु नैतिकता का व्यावहारिक स्वरूप प्रत्येक देश के अपने जीवन दर्शन पर आधारित होता है। उदाहरणार्थ आध्यात्मिकता पर आधारित भारतीय राष्ट्रवाद विश्व की एकता में पूरक है जबकि अन्य देशों में राष्ट्रवाद विश्व के लिए अभिशाप सिद्ध हुए हैं। नारी के प्रति मातृत्व भाव भारत के बाहर कल्पना के परे की बात है। अतः सर्वप्रथम हमें छात्रों को नैतिकता के आधारभूत अपने जीवन दर्शन का ज्ञान कराना तथा उसके प्रति श्रद्धा का भाव जागृत करना होगा। इसी को हम धर्म शिक्षा कह सकते हैं।

कुछ लोग धर्म का नाम आते ही चौंक पड़ते हैं। उनका कथन है कि धर्मनिरपेक्ष भारत में धर्म की शिक्षा विद्यालयों में नहीं दी जा सकती। परन्तु ऐसा कहकर हम भावी पीढ़ी का विनाश कब तक करते रहेंगे ? धर्म के बिना नैतिकता एवं सदाचार की कल्पना ही नहीं की जा सकती। एक विद्वान के अनुसार "बिना धर्म के नैतिकता की बात करना उसी प्रकार है जैसे बिना जड़ों के वृक्ष। हाँ, धर्म का हमें व्यापक एवं सही अर्थ लेना पड़ेगा। धर्म का अर्थ उपासना पद्धति से नहीं है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार "Religion is the menifestation of Divinity already within man"। वास्तव में आज हमारे देश में आध्यात्मिकता के भावों को छात्रों में जागृत करने की आवश्यकता है। नैतिकता एवं सदाचार तो इस भाव जागरण के स्वाभाविक परिणाम होंगे।

एक बात और समझ लेना आवश्यक है कि नैतिकता मनुष्य का चरम लक्ष्य नहीं है, वह तो लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग है। उपयोगितावादी मनुष्य के नैतिक संबंधों की व्याख्या नहीं कर सकता। उपयोगिता के आधार पर हम किसी भी नैतिक नियम पर नहीं पहुँच सकते। कोई भी नैतिक नियम तब तक नहीं टिक सकते जब तक वे अतीन्द्रिय ज्ञान पर आधारित न हों। उपयोगितावादी हमसे कहते हैं कि नैतिक नियमों का पालन करो, समाज का कल्याण करो। आखिर हम क्यों किसी का कल्याण करें ? क्यों नैतिक बनें ? भलाई करने की बात तो गौण है, प्रमुख बात तो है एक आदर्श नैतिकता स्वयं साध्य नहीं है, वह तो साध्य को प्राप्त करने का साधन है। यदि उद्देश्य नहीं है तो हम क्यों नैतिक बनें ? हम क्यों दूसरों की भलाई करें ? क्यों हम लोगों को सतायें नहीं ? यदि आनन्द ही मानव जीवन का उद्देश्य है, तो क्यों न मैं दूसरों को कष्ट पहुँचाकर सुखी बनूँ ? इन प्रश्नों के उत्तर हमें धर्म तथा आध्यात्मिकता पर आधारित भारतीय जीवन दर्शन ही देने में समर्थ है। अन्य सभी मतवाद इन संबंध में–मौन हैं। अतः हमें छात्रों को जीवन के उस चरम लक्ष्य को हृदयंगम कराना होगा जो नैतिक बनने के लिए प्रेरित करता है।

भारतीय जीवन दर्शन के अनुसार इस समस्त

चराचर जगत में एक शाश्वत चेतना परमात्म तत्व व्याप्त है। इस परम आत्मतत्व की अभिव्यक्ति करना ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में ''प्रत्येक आत्मा ही अव्यक्त ब्रह्म है। बाह्य एवं अन्तः प्रकृति, दोनों का नियमन कर इस अन्तर्निहित ब्रह्म स्वरूप को अभिव्यक्त करना ही जीवन का ध्येय है।'' श्री अरविन्द ने इस बात को इन शब्दों में कहा है, ''जीवन का लक्ष्य है भागवत की उपस्थिति और चेतना में प्रवेश करना और उससे अधिकृत होना, भगवान से एकमात्र भगवान के लिए ही प्रेम करना, अपनी प्रकृति को भगवान की प्रकृति के साथ एक स्वर करना और अपने संकल्प, कार्यकलाप एवं जीवन को भगवान का यन्त्र बनाना।''

जीवन के इस उद्देश्य को सर्व सामान्य व्यक्ति की सीमित कल्पनाओं एवं व्यावहारिक धरातल की भाषा में कहा गया है कि समाज ही उस अव्यक्त ब्रह्म का विशाल एवं विराट व्यक्त रूप है। अतः अपने जीवन को इस समाज परमेश्वर की सेवा में पूर्णरूपेण समर्पित करना ही जीवन का चरम लक्ष्य है। इसी में मानव जीवन का सच्चा सुख निहित है। वास्तव में मनुष्य अपने अल्पत्व को नष्ट कर जितनी विशालता का अनुभव करेगा, उतना ही उसे सुख मिलेगा। यही विचार 'यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति' इस वेद वाक्य में प्रगट किया गया है।

मनुष्य का अल्पत्व इसी कारण से है कि वह अपने को एक देहधारी मात्र समझता है। अपने शरीर को ही सर्वस्व समझकर उसके सुख के निमित्त वह परिवार, भरण–पोषण इत्यादि में मग्न रहकर 'मैं और मेरा' इस भावना की चारों ओर संकुचित मर्यादाएँ बना लेता है। अतः जीवन ध्येय की प्राप्ति के लिए इन क्षुद्र मर्यादाओं को तोड़ना आवश्यक है। पूर्ण स्वार्थपरता ही चरम लक्ष्य है। यही नैतिकता की नींव है। इसलिए नैतिकता की यही एक मात्र व्याख्या की गई है कि जो स्वार्थपर है वह नीति विरुद्ध है और जो निःस्वार्थपर है वह नीति सम्मत है।

अतः हमें नैतिक शिक्षा से पूर्व इस दर्शन को छात्रों के अन्तःस्थल तक पहुँचाना होगा। मानव जीवन के चरम लक्ष्य की ओर उनके जीवन को उन्मुख करना होगा। इसके लिए हमें भगीरथ प्रयत्न करने आवश्यक हैं। मार्ग कठिन अवश्य है, परन्तु मानवता के विकास एवं राष्ट्रजीवन को समुन्नत बनाने के लिए अन्य कोई मार्ग भी नहीं है। वर्तमान में छात्रों के व्यवहार में गिरावट का कारण उनका उद्देश्यविहीन जीवन ही है। चीन अथवा पाकिस्तान के आक्रमण के समय इन्हीं छात्रों के व्यवहार एवं भावनाओं में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखाई देता है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम काल में इन्हीं छात्रों में से विवेकानन्द, अरविन्द, गांधी, सुभाष, हेडगेवार, भगतसिंह, सावरकर आदि सहस्रों वीर पुत्र उत्पन्न हुए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् क्या भारत माता बाँझ हो गई ? नहीं। आज आवश्यकता है राष्ट्र के सम्मुख महान उद्देश्य की। एक बार छात्रों के जीवन में महान उद्देश्य प्रस्थापित करने में हम सफल हो गये तो राष्ट्रभक्ति, अनुशासन, कर्त्तव्यनिष्ठा, प्रामाणिकता एवं श्रमनिष्ठा आदि नैतिक गुणों का रोपण सरलतापूर्वक हो सकेगा और पुनः हमारे इन्हीं छात्रों में से भारतमाता को उज्ज्वल करने वाले महान पुत्र बनेंगे। अन्त में एक बात और कहनी है। नैतिक शिक्षा देने का कार्य हमें राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप निर्धारित करना होगा। राष्ट्रीय योजनाओं में इसे वरीयता प्रदान करनी होगी। केवल अध्यापकों पर छोड़ देने से यह कार्य नहीं होगा। नैतिकता के वातावरण को बनाने के लिए जब तक सभी क्षेत्रों से सामूहिक प्रयास नहीं होगा तब तक इसमें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। परन्तु इसके लिए पहल अध्यापकों को ही करनी होगी।

सावन में

—ज्ञान प्रकाश आकुल

बूढ़ी हुयीं बुआ पर हर
सावन में मैके आ जाती हैं।
बापू के सँग बिदा हो गये
सब अधिकार दुआरे के
आँगन चौखट और कोठरी
चली गयीं अम्मा ले के
सूखे हुये ताल से जाकर
जाने क्या-क्या बतियाती हैं।
आँखों में मोतियाबिंद है
जाने कैसा धुआँ मचा
बचपन मे जो नीम खड़ा था
अब बस केवल ठूँठ बचा
उसी ठूँठ के नीचे क़कर
कुछ भूला बिसरा गाती हैं
हर पीपल बरगद गलियारे
से बचपन का नाता है
खुद ही चलकर आ जाती हैं
कोई नहीं बुलाता है
जाते समय ज़रा से चावल
हर घर में बिखरा आती हैं

अर्थ-गुरू वह होते हैं जो शिष्य को बुरे रास्तों पर जाने से रोकते हैं,
खुद हमेशा निष्पाद रास्ते पर चलते हैं,
शिष्योंके हित और कल्याण की कामना करते हैं।

सच्ची घटना

कृष्ण और सुदामा का प्रेम बहुत गहरा था। प्रेम भी इतना कि कृष्ण, सुदामा को रात दिन अपने साथ ही रखते थे। कोई भी काम होता, दोनों साथ–साथ ही करते।

एक दिन दोनों वनसंचार के लिए गए और रास्ता भटक गए। भूखे–प्यासे एक पेड़ के नीचे पहुँचे। पेड़ पर एक ही फल लगा था। कृष्ण ने घोड़े पर चढ़कर फल को अपने हाथ से तोड़ा। कृष्ण ने फल के छह टुकड़े किए और अपनी आदत के मुताबिक पहला टुकड़ा सुदामा को दिया।

सुदामा ने टुकड़ा खाया और बोला–'बहुत स्वादिष्ट ! ऐसा फल कभी नहीं खाया। एक टुकड़ा और दे दें।' दूसरा टुकड़ा भी सुदामा को मिल गया। सुदामा ने एक टुकड़ा और कृष्ण से मांग लिया। इसी तरह सुदामा ने पांच टुकड़े मांग कर खा लिए।

जब सुदामा ने आखिरी टुकड़ा मांगा, तो कृष्ण ने कहा–'यह सीमा से बाहर है। आखिर मैं भी तो भूखा हूँ। मेरा तुम पर प्रेम है, पर तुम मुझसे प्रेम नहीं करते। और कृष्ण ने फल का टुकड़ा मुँह में रख लिया। मुँह में रखते ही कृष्ण ने उसे थूक दिया, क्योंकि वह कड़वा था।

कृष्ण बोले–तुम पागल तो नहीं, इतना कड़वा फल कैसे खा गए ?'

उस पर सुदामा का उत्तर था–'जिन हाथों से बहुत मीठे फल खाने को मिले, एक कड़वे फल की शिकायत कैसे करूँ ? सब टुकड़े इसलिए लेता गया ताकि आपको पता न चले।'

शिशु मन्दिर शिक्षण पद्धति के वैशिष्ट्य

सरस्वती शिशु मन्दिर शिक्षण योजना को आज भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हो चुकी है। तो स्वभावतः यह जानने की इच्छा होती है कि आखिर शिशु मंदिर शिक्षण पद्धति के वे वैशिष्टय कौन–कौन से हैं, जिनके कारण शिक्षा के क्षेत्र में ये विद्यालय अपनी अलग पहचान बनाये हैं। आइये, इससे सम्बन्धित कुछ विन्दुओं पर विचार करें।

1. सरस्वती शिशु मन्दिर स्कूल नही, मानवता के विकास का पवित्र, मंदिर है –

मनुष्य के विकास के इस लक्ष्य को "बेचारा स्कूल" कैसे पूरा कर सकता है। स्कूल तो अक्षर ज्ञान दे सकता है। विविध जानकारियों का भण्डार सौंप सकता है। विभिन्न कुशलतायें प्रदान कर सकता है। 'मनुष्यत्व' का विकास तो किसी संस्कारक्षम परिवेश में ही सम्भव है। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का, बालक में सुप्त रूप से विद्यमान 'देवत्व को उद्भाषित करने का कार्य, शान्त रूप से एकाग्रता के साथ सतत् साधना का कार्य है। साधना सदैव पवित्र और शान्त वातावरण में हुआ करती है। जहाँ साधना की जाती है, इस पुनीत स्थल को मन्दिर कहते है। इसी भाव भूमिका के साथ शिक्षा के इस अभिनव प्रयोग स्थल को "स्कूल" न कहकर "मन्दिर" पुकारा गया है।

ज्ञानदायिनी माँ सरस्वती के इस पुण्य मंदिर से ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति "शिशु में नारायणत्व का दर्शन करते है–उसकी विकास प्रक्रिया के साधकगण आचार्य और अभिभावक। "सरस्वती शिशु मंदिर" इन तीन शब्दों के समुच्चय में भारतीय शिक्षा दर्शन की सम्पूर्ण वैचारिक पृष्ठभूमि समाहित हो गई है।

इसी कारण शिशु मन्दिर शिक्षा पद्धति में विद्यालय भवन, प्रांगण, स्वच्छता, सज्जा, पवित्रता पूर्ण एवं संस्कारक्षम वातावरण निर्मिति को अत्यन्त महत्व दिया है। महापुरूषों के चित्र, श्रेष्ठ वचन, प्रेरक घटना चित्र सुरुचिपूर्ण ढंग से शिशु मन्दिर भवन में 'अंकित किये जाते है। फूल, पौधे, हरी–भरी क्यारियाँ प्रदूषण को मिटाकर, परिवेश में ओज भरती है। शिशु आचार्य के आत्मीय संबंध वातावरण में एक पवित्र मधुरता घोलते रहते हैं। धूप–दीप की सुगन्धि में जैसे मन आल्हादित हो जाता है, वैसे ही मंदिर के इस पवित्र वातावरण में शिशु में 'देवत्व' के अंकुर स्वतः प्रस्फुटित होने लगते हैं। 'स्कूल' के स्थान पर 'सरस्वती शिशु मन्दिर' शाब्दिक परिवर्तन मात्र नहीं है, वरन् सच्चे अर्थों में शिशु मंदिर संस्कारक्षम परिवेश उत्पन्न करने में सफल हुए हैं।

2. बालक की ओर देखने की विशिष्ट दृष्टि–

जगती तल पर भारत ही एक ऐसा विशिष्ट देश है जिसने 'शिशु में भगवान का दर्शन किया है। यहाँ के आंगन में 'ठुमकते' चलते शिशु की 'बजती पैंजनियों' में प्रभु की लीला देखकर माता–पिता धन्य हो उठते थे। "शिशु के देवता के गुणगान करने में सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले सूर इसी देश में हुआ करते है।

सरस्वती शिशु मन्दिर शिक्षण पद्धति ने भी 'अहं ब्रह्मास्मि', 'शिवोऽहम्' के भारतीय चिन्तन के अनुसार यह स्वीकार किया है कि सभी प्राणियों में वहीं परमतत्व स्थित है। इसी कारण शिशु मंदिर ने

'विद्यार्थी और मास्टर' के व्यवसायगत रिश्तों को अस्वीकार करते हुए, बालक के संबंध में नवीन दृष्टिकोण दिया। हमारे आचार्य ने बालक में उसी चैतन्य का दर्शन किया, जो स्वयं उसमें हैं।

इसी कारण यहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी का अन्तर समाप्त हो गया। दोनों एक हो गये। एक देवी आत्मीयता का सूत्र दोनों को जोड़ गया। जिसके कारण बालक पराया नहीं, आचार्य का अपना "भैया बहिन" हो गया।

शिशु मन्दिरों के आरम्भ होने से बच्चों की दुनिया में एक नवीन क्रान्ति आ गई है। कल तक 'स्कूल' उनके लिए एक भयावह स्थान था। जेल का पर्याय था। सर्वाधिक कष्टकर और अरुचिकर स्थान था। अभिभावकों के द्वारा उसे बाँध पकड़कर स्कूल तक ले जाने का हृदय विदारक दृश्य कभी प्राथमिक शाला का सामान्य रूप था।

परन्तु सरस्वती शिशु मन्दिर के बालक को अपने आचार्य के हृदय में अपने लिए असीम आत्मीयता का दर्शन हुआ। वह उसकी गोद में बैठता है, उनके साथ खेलता है, रूठता है, हँसता है, हँसाता है। घर का स्नेहपूर्ण दायरा विद्यालय तक व्याप्त हो गया।

उसके सीखने की जिज्ञासा, ग्रहण करने की ललक, सब कुछ समझने की उमंग, जो कल तक "मास्टर" के रौद्र रूप से झुलस कर कुंठित हो रही थी वह आज शिशु मंदिर में "आचार्य" की आत्मीयता पाकर द्विगुणित हो गई है।

3. शिक्षक के स्थान पर अपने जीवन एवं व्यवहार से प्रेरणा देने वाला आचार्य–

"गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु" के देश के शिक्षक को मैकाले की शिक्षा व्यवस्था ने अत्यन्त बौना बना दिया। बेचारा स्कूल मास्टर क्लास रूम में केवल लेक्चर दें सकता है (अब वह भी नहीं) ग्रामोफोन रिकार्ड की तरह जितना उसमें भरा है उतना उगल देगा। बस उसका कार्य समाप्त।

किन्तु बालक लिए, उसके देवत्व को जगाने के लिए, उसमें सद्गुणों और सद्सँस्कारों को जगाने के लिए शिक्षक के वाग्विलास की नहीं, बल्कि जीवन्त प्रेरणा की आवश्यकता है। उसमें निज जीवन का आदर्श और आचरण से सीख देने की क्षमता चाहिए। जलता दीपक हो दूसरे को ज्योति दे सकता है। जो स्वयं बुझा है वह चेतना क्या दे सकेगा ?

ज्ञान की चार किताबे रटकर, अपने मस्तिष्क में जानकारियाँ दूंसकर, 'मास्टर' बनना सरल है। किन्तु वाणी से ही नहीं अपने आचरण से बालक को सीख देने की क्षमता लाना, संयम और साधना का कार्य है। सरस्वती शिशु मन्दिर ने शिक्षक की इसी संकल्पना को आचार्य के रूप में प्रकट किया है। जो अपनी वाणी, व्यवहार, आचरण, वेश–भूषा और कार्यकलाप से शिशु के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करता है। अतः शिशु मंदिर में आचार्य का जीवन भी सतत् सीखने, ग्रहण करने की प्रक्रिया में ही रहता है। शिशु मंदिर की साधना स्थली में आचार्य अपने भैया–बहिनों के साथ नित्य समवेत स्वर में कामना करता है– "सहना ववतु। सहनौ भुनक्तु। तेजस्विनावधीतमस्तु।" हम दोनों मिलकर साथ–साथ विकास करें।

4. विभिन्न विषयों का ज्ञान मात्र देना नहीं, जीवन में सद्संस्कार जगाना–

अपने देश में बौद्धिक ज्ञान शिक्षा का एक अंग मात्र रहा है। साक्षरता ही सम्पूर्ण शिक्षा नहीं थी, जैसा कि आज हो गया है। व्यक्ति के जीवन एवं व्यवहार में

परिवर्तन के लिये शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग था–संस्कारा।

शिक्षा का वर्तमान रूप केवल पुस्तकीय रह गया है, इसका दुष्परिणाम आज सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। मनुष्य का बौद्धिक ज्ञान और सूझबूझ विनाश और विध्वंस के आविष्कार में लग रहा है। आज का तथाकथित शिक्षित समुदाय हो सर्वाधिक भ्रष्ट और अनैतिक आचरण में डूबा है। क्योंकि उसने जीवन का संस्कार पाया ही नहीं। वह तो केवल ज्ञान और तंत्र का ज्ञाता है।

सरस्वती शिशु मन्दिर शिक्षा व्यवस्था में पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही सद्संस्कारों के जगाने की महत्वपूर्ण योजना की गई है। भारतीय जीवन मूल्यों तथा सदाचार का शिशु के जीवन में संस्कार देने के लिये विशिष्ट पाठ्यक्रम तथा क्रियाकलाप निश्चित किये गये हैं। दया, सहयोग, मैत्री, स्वच्छता, पवित्रता, साहस, निर्भयता, सत्य शील आदि सद्गुणों से संबंधित महापुरुषों की जीवन कथा तथा प्रेरक प्रसंगों का पाठ्यक्रम है। शिशु के जीवन में उसके अभ्यास के लिये शिशु मंदिर में संस्कारक्षम वातावरण बनाये जाने की विशेष चिन्ता की जाती है। साथ ही इस हेतु अनेक पाठ सहगामी क्रियाकलाप यथा– सरस्वती यात्रा, शिशु शिविर, देश दर्शन यात्रा, ग्राम दर्शन, वन विहार, सहभोज आदि की योजना की जाती है। भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों की ज्ञानात्मक जानकारी के लिये संस्कृति ज्ञान परीक्षा का भी आयोजन होता है।

5. अध्यात्मभाव के जागरण का व्यावहारिक प्रयोग

मैकाले शिक्षा तंत्र के दुष्प्रभाव के कारण आज भारतीय समाज पश्चिम की भोगवादी जीवन पद्धति की जकड़न से ग्रस्त है। परिणामस्वरूप भारतीय परिवार टूट रहा है। नवयुवक आस्था विहीन होकर दिग्भ्रान्त है। अपनी भाषा, अपना वेश, अपने पर्व, अपने जीवन मूल्य, अपनी मान्यतायें अपने जीवन की पद्धति उसे खोखले और व्यर्थ दीख रहे हैं। पश्चिम की चकाचौंध में आज की तरुणाई अन्धी हो रही है। जो कुछ भी भारतीय है उसे वह सब निकृष्ट लगता है। पाश्चात्य का सब कुछ श्रेष्ठ। इसी कारण हमारे बालक आज अपने देश और संस्कृति से कटते जा रहे हैं। अतः इस देश के बच्चों को देश की संस्कृति और माटी से जोड़े रखने के लिए आवश्यक है कि बाल्यकाल से ही उनके हृदय में अध्यात्मभाव के जागरण की योजना की जाए।

सरस्वती शिशु मन्दिर शिक्षण पद्धति में इस और विशेष ध्यान देकर कई व्यावहारिक प्रयोग किये जा रहे हैं, जो कि सार्थक और प्रभावकारी सिद्ध हो रहे हैं। यथा–

प्रार्थना सभा

शिशु मन्दिरों में दैनिक शैक्षणिक कार्य के पूर्व सामूहिक प्रार्थना सभा की योजना होती है। आचार्य और शिशु सभी प्रार्थना स्थल पर सामूहिक बैठते हैं। आरम्भ में हनुमान चालीसा, सुन्दर काण्ड, मानस, गीता के श्लोक, कुछ प्रसिद्ध आरतियाँ, भजन, एकात्मतास्तोत्र आदि का अलग–अलग दिनों पर सामूहिक पाठ होता है। यह सब इतना प्रभावी एवं स्वाभाविक होता है कि धीरे–धीरे शिशुओं की दिनचर्या का नियमित अंग बनकर, उनके हृदय को श्रद्धा एव समर्पण के भाव से भर देता है। माँ सरस्वती की वन्दना ब्रह्मनाद, ध्यान, गायत्री मंत्र, और शान्तिपाठ, एक पवित्र परिवेश को निर्मित करते हैं।

सामूहिक भोजन–

मध्याह्न में सभी शिशु सामूहिक रूप से एक

साथ भोजन करते है। उस अवसर पर, पवित्र ग्रन्थों के कुछ श्लोक, सूक्तियों आदि का पाठ होता है। फिर सर्वस्वार्पण का मंत्र–''ऊँ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर बोलने के पश्चात भोजन होता है। एक दूसरे के भोजन का स्वाद लेते हुए, हम एक है, और एक ही परमात्मा के पुत्र हैं– इस एकात्मता की अनुभूति करते हैं।

इसी दृष्टि से अन्यान्य क्रियाकलाप आयोजित होते हैं।

6. परिवार और विद्यालय का सामीप्य बालक का विकास का आधार

शिशु मन्दिर का मुख्य वैशिष्टय उसकी संस्कारपूर्ण शिक्षा है। जिसके लिए परिवार का सहकार्य अत्यधिक आवश्यक है। क्योंकि शिशु मन्दिर में तो बालक का बहुत थोड़ा समय व्यतीत होता है। उसका अधिकांश समय घर से ही जुड़ा रहता है। अतः बालकों में स्थायी संस्कार डालने एवं समुचित विकास के लिए घर और शिशु मन्दिर के वातावरण में सामंजस्य होना आवश्यक है। इसी दृष्टि से शिशु मंदिर शिक्षण व्यवस्था में आरम्भ से ही अभिभावक सम्पर्क को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसके माध्यम से आचार्य समय–समय पर घर जाकर बालक के क्रियाकलाप का अध्ययन, उसकी प्रगति का मूल्यांकन करते हैं। बालक की प्रगति में आने वाले अवरोधों का पता लगाकर उसे दूर करने का प्रयास किया जाता है।

साथ ही अभिभावक सम्पर्क के माध्यम से ही परिवारों में भारतीय संस्कार पहुँचाने का प्रयत्न होता है। सद्साहित्य, महापुरुषों के चित्र, सुन्दर गीतों और एकात्मता स्तोत्र के कैसेट आदि सम्पर्क के माध्यम से घर में पहुँचने लगते हैं, जिससे परिवार का परिवेश बालक को समुचित संस्कार देने के अनुकूल बनता है।

अभिभावक सम्पर्क की एक अगली कड़ी अभिभावकों का प्रशिक्षण है। बालक की ओर देखने की विशिष्ट दृष्टि, विकास की संभावनाओं की जानकारी तथा विद्यालय के कार्यकलाप एवं विकास में उत्तरोत्तर सहयोगी बनने हेतु अभिभावक सम्मेलन, अभिभावक गोष्ठियाँ आदि कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

7. शिशु मंदिर शिक्षण पद्धति का प्रभावी साधन– शिशु भारती

सरस्वती शिशु मंदिर शिक्षण पद्धति में 'शिशु भारती' का विशिष्ट स्थान है। 'शिशु भारती' के बिना आदर्श शिशु मंदिर की कल्पना ही नहीं की जा सकती। शिशु भारती एक अनूठा शैक्षिक प्रयोग है जिसके माध्यम से शिशु की प्रत्येक प्रतिभा का विकास क्रमिक गति से किया जा सकता है। आरम्भ से ही शिशुओं में नेतृत्व तथा दायित्व वहन करने की वृत्ति उत्पन्न करके 'सीखने' की प्रक्रिया ही शिशु भारती है। जिसके अन्तर्गत विविध कार्यक्रमों तथा विभागों के माध्यम से युक्त सुप्त प्रतिभाएँ आनन्ददायक वातावरण में बालक की पनप उठती हैं। शिशु भारती शिशुओं के लिये, शिशुओं द्वारा संचालित एक संगठन हैं जिसमें अध्यक्ष, मंत्री, सेनापति व विविध विभागों के प्रमुख शिशु ही होते हैं। चिकित्सा, पुस्तकालय, वाचनालय, स्वच्छता, सज्जा, क्रीड़ा, उद्यान आदि विभागों की देख–रेख तथा व्यवस्था शिशु ही स्वयं करते हैं। पाक्षिक व मासिक बैठकों में वे प्रगति का मूल्यांकन करते हैं तथा आगामी योजनाओं पर विचार–विमर्श करते हैं। इसी के अन्तर्गत साप्ताहिक शिशुसभा भी होती है। जिसमें नन्हें–मुन्हें, गीत, कहानी, चुटकुले आदि के अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं इस "शिशु भारती" के माध्यम से, विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाएँ करते–करते शिशुओं में दायित्व

बोध, आत्म स, सहयोग, सेवा, अनुशासन और नेतृत्व आदि गुणों का स्वतः विकास होता है। जिसका आधार करके के सीखना ही है।

वैशिष्ट पाठ्क्रम

बालकों के शारीरिक, मानसिक और भावात्मक प्रयास को ध्यान में रखकर शिशु मन्दिर का एक विशिष्ठ पाठ्क्रम है। जिसमें बालक के ज्ञानात्मक और व्यावहारिक दोनों पक्षों के विकास की योजना की गई हैं।

द्वितीय कक्षा से ही वार्तालाप के आधार पर संस्कृत का निश्चित पाठ्यक्रम तथा पुस्तकों की रचना गई है। नीति और भक्ति तथा गीता आदि ग्रन्थों के कुछ अंश बालक कंठस्थ करते हैं। इस प्रक्रिया से संस्कृत की सामान्य जानकारी तो शिशुओं को होती ही है। किन्तु विशेष बात यह है कि शिशु अवस्था से ही संस्कृत भाषा को अधिकाधिक सीखने की जिज्ञासा तथा था उनमें उत्पन्न होती है।

अपने गौरवशाली इतिहास का वास्तविक ज्ञान के लिए विशेष पाठयक्रम तथा पुस्तकों की रचना गई है। कथा, कहानी शिशु मंदिर का केन्द्रीय विषय है। प्रेरक कथाएँ, ऐतिहासिक प्रसंग, बालकों को भूत एवं वर्तमान से जोड़कर भविष्य के लिए तैयार का सुन्दर माध्यम है। बालक के जीवन पर उसकी टछाप पड़ती है।

सरस्वती शिशु मन्दिर के पाठ्क्रम में 'योग' भी स्थान है। आसन, ध्यान, प्राणयाम आदि का नियमित अभ्यास बालक शिशु मंदिर में करते हैं। विद्या की की ओर से शिशु मंदिरों के लिये योग का एक पृष्ठ पाठ्क्रम तैयार किया गया है। विद्या भारती की से संस्कृति ज्ञान परीक्षा का भी आयोजन किया जाता है, जिसके माध्यम से शिशुओं में सामान्य ज्ञान को अभिवृद्धि होती है।

बाल केन्द्रित क्रिया आधारित, ज्ञानार्जन पद्धति

भारत की प्राचीन शिक्षा संरचना का एक मुख्य वैशिष्टय यह था कि वह छात्र केन्द्रित थी। वार्ता, वाद–विवाद तर्क, स्मरण, चिन्तन, अभ्यास आदि के द्वारा छात्र स्वयं ज्ञानार्जन करता था। कठिनाई के क्षणों में ही गुरु का मार्गदर्शन मिलता था। इसलिए उस समय ज्ञानार्जन की सरल पद्धतियों पर बहुत विचार हुआ था। मन की एकाग्रता, ध्यान, प्राणायम आदि सब ज्ञानर्जन को सुगम बनने के लिये ही थे। पातंजलि का योग दर्शन ज्ञानार्जन पद्धति का ही ग्रन्थ है।

आज इसके विपरीत स्थिति है। बच्चा स्वयं सीखता नहीं, अध्यापक उसे पढ़ाता है। इसी कारण आज के छात्रों के परिप्रेक्ष्य में सीखने की कला का विकास नहीं हुआ है। आज तो शिक्षक के शिक्षण कला का विकास किया जा रहा है। शिक्षार्थी के सीखने की कला की ओर दुर्लक्ष है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि "ज्ञान ऊपर से थोपा नहीं जाता, वह तो अन्तःप्रेरणा से प्रस्फुटित होता है।" वास्तव में छात्र को ज्ञान देना नहीं अपितु उसे ज्ञान अर्जित करने की विधियाँ बतानी है। समस्त शिक्षण प्रक्रिया को पुस्तक आधारित न बताकर, क्रिया आधारित बनाना है। छात्रों को जिज्ञासु बनाना है। उनमें खोजीवृत्ति जाग्रत करनी है। इसी आधार पर शिशु मंदिर में बाल केन्द्रित और क्रिय–आधारित ज्ञानार्जन पद्धति अपनाई गई है। बालक स्व करके अधिकाधिक सीखें इसका प्रयास रहता है। इस लिये पंचपदी शिक्षा प्रद्धति का विकास किया गया है।

रामकृष्ण परमहंस

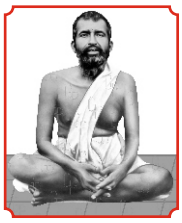

स्वामी विवेकानन्द के प्रेरणास्त्रोत रामकृष्ण परमहंस का जन्म 18 फरवरी 1836 ई0 को बंगाल के कामारपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पण्डित खुदीराम चट्टोपाध्याय था जो एक कर्मकाण्डी ब्राह्मण थे। माता श्रीमती चन्द्रा देवी ईश्वर परायण धार्मिक महिला थी। रामकृष्ण परमहंस के बाल्यावस्था का नाम था गदाधर। यह भगवान् विष्णु का नाम है जिसका अर्थ है–गदाधारण करने वाला।

बालक गदाधर बचपन से ही बड़े चंचल एवं नटखट स्वभाव के थे। अत्यन्त सुन्दर होने के साथ–साथ, वे बड़े प्रतिभावान भी थे और उनकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी। आठ वर्ष की अवस्था में ही गदाधर को पितृ स्नेह से वंचित हो जाना पड़ा। इनके पिता को साधु–सन्यासियों के प्रति गहरा लगाव था। बालक गदाधर को भी साधु–महात्माओं की सेवा में बड़ा आनन्द आता था।

सामाजिक कुरीतियों के प्रति गदाधर के मन में बचपन से ही गहरा विरोधभाव था। उनके उपनयन संस्कार के समय जब उनको परिवार की माताओं से भिक्षा की याचना करने को कहा गया तो वे धनी नाम की लोहारिन के पास भिक्षा माँगने के लिए चले गए। इस घटना से उनकी सामाजिक समरसता की भावना का पता लगता है।

उनके बड़े भाई कलकत्ता में रहते थे। उन्होंने आगे की पढ़ाई जारी रखने के लिए गदाधर को भी कलकत्ता ही बुलवा लिया। पर गदाधर का मन इस स्कूली पढ़ाई में बिलकुल भी न लगा। उन्होंने बड़े भाई से कहा–मैं यह दाल–रोटी कमाने की विद्या नहीं सीखूंगा। मुझे तो ऐसी विद्या चाहिए जो परमतत्व व ज्ञान करा सके। 1856 में रानी रासयणि ने दक्षिणेश्वर मन्दिर में उनसे पुजारी का पद स्वीकार करने के लिए अनुरोध किया। गदाधर की तो जैसे मनचाही मुराद पूरी हो गई। वे अनन्य भक्ति भाव से माँ काली की उपासना करने लगे। कहा जाता है कि एक दिन पूजा करते–करते वे माँ के प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए, इतने विहवल हो गए कि तलवार लेकर अपने जीवन का अन्त करने के लिए उद्यत हो गए। उनकी इस अटूट श्रद्धा से प्रसन्न होकर माँ ने साक्षात् प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिए। उस दिन के बाद रामकृष्ण लगातार माँ के साथ प्रत्यक्ष संवाद करते थे।

उनका विवाह जयरामधारी के निवासी पं0 रामचन्द्र मुखोपाध्याय की कन्या शारदामणि से हुआ था। यह विवाह स्वयं उनकी इच्छा से ही हुआ। उस समय उनकी आयु चौबीस वर्ष की थी। पर उन्होंने पत्नी को भी माँ के रूप में ही स्वीकार किया। रामकृष्ण तो पहले से ही सिद्ध महापुरुष थे। पर उन्हें साधना के पथ में प्रवृत्त होने की विशेष प्रेरणा भैरवी ब्राह्मणी और स्वामी तोतापुरी जी से मिली। उन्होंने काशी जाकर तत्कालीन सिद्ध पुरुष तैलंग स्वामी जी के साथ भी सत्संग किया। उनको गदाधर से स्वामी रामकृष्ण का नाम तैलंग स्वामी ने ही दिया था।

रामकृष्ण परमहंस सभी धर्मों का एक ही लक्ष्य मानते थे–परमेश्वर की प्राप्ति। स्वयं भी एक प्रयोगधर्मी होने के कारण रामकृष्ण परमहंस ने ईसाई और इस्लाम मतों की लौकिक दीक्षा लेकर, उनकी पैगम्बरों द्वारा बताई गई विधि से साधना की और सत्य का साक्षात्कार किया।

रामकृष्ण के हृदय में दीन और दलितों के प्रति अपार करुणा भरी हुई थी। जनवरी 1868 में वैद्यनाथ धाम की तीर्थ यात्रा पर जाते हुए, उन्होंने गरीब ग्रामवासियों की ओर संकेत करते हुए अपने शिष्य मथुरा बाबू से कहा–''तुम्हारे सामने ये दरिद्रनारायण है। तुम्हारा सौभाग्य है कि आज घर बैठे गंगा तुम्हारे पास आ गई है। सारा धन तो उस नारायण का है। उसी नारायण का व्यक्त स्वरूप हैं, ये दरिद्रनारायण।''

रामकृष्ण परमहंस के कारण दक्षिणेश्वर मंदिर धीरे–धीरे सामाजिक और आध्यात्मिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। कलकत्ता से नवयुवकों के दल, 'इस महापुरुष से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए दक्षिणेश्वर आने लगे। इन्हीं में बालक नरेन्द्र भी थे जिस पर रामकृष्ण की विशेष कृपा हुई और आगे चलकर स्वामी विवेकानन्द के नाम से उन्होंने भारतीय संस्कृति का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शंखनाद किया।

17 अगस्त 1886 ई0 के दिन रामकृष्ण परमहंस ने नश्वर देह का परित्याग किया। पर मृत्यु के पूर्व उन्होंने अपनी सम्पूर्ण आध्यात्मिक शक्तियों को विवेकानन्द में संचरित कर दिया।

उनके देहान्त के बाद स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु भाइयों के सहयोग से रामकृष्ण मठ की नींव डाली।

क्या आपने ईश्वर को देखा है ?

ईश्वर की सत्ता के बारे में संशयग्रस्त नरेन्द्र दक्षिणेश्वर पहुँचे और उन्होंने जाते ही स्वामी राम कृष्ण परमहंस से एक विचित्र प्रश्न कर डाला। उन्होंने पूछा–''महाराज क्या आपने कभी स्वयं आँखों से ईश्वर को देखा है ?'' परमहंस ने तपाक से उत्तर दिया–''देखा है, ठीक इसी प्रकार जिस प्रकार से मैं तुम्हें देख रहा हूँ।''

''क्या आप मुझे भी ईश्वर के दर्शन करा सकते हैं ? नरेन्द्र ने दूसरा प्रश्न किया। क्यों नहीं, अभी इसी समय दिखा सकता हूँ। परमहंस जी ने उत्तर दिया। नरेन्द्र ने जीवन में प्रथम बार ऐसे शब्द सुने थे। बस उसी क्षण उन्हें लगा कि जैसे वे स्वामी रामकृष्ण परमहंस के सामने नहीं अपितु साक्षात् ईश्वर के सामने खड़े हैं।

।। अद्भुत स्नेह ।।

नरेन्द्र (स्वामी विवेकानन्द) के पिता का स्वर्गवास हो चुका था। परिवार आर्थिक संकटों से ग्रस्त था। परन्तु किशोर नरेन्द्र शान्त था। श्री रामकृष्ण देव के पास उनका नियमित रूप से जाना होता था।

एक दिन उन्होंने देखा–श्री राम कृष्ण देव अपने एक गृहस्थ शिष्य आनन्द गुहा से कह रहे थे, ''नरेन्द्र के पिता का स्वर्गवास हो गया है। उसका परिवार भयंकर आर्थिक संकटों से ग्रस्त था। इस समय आप सभी मित्रों को उसकी आर्थिक सहायता करनी चाहिए।''

नरेन्द्र ने सुना। उन्हें असह्य पीड़ा हुई। आनन्द गुहा के जाते ही वे गुरुदेव के ऊपर क्रोध से बरस पड़े। ''आपने ये बातें क्यों की ? क्या आवश्यकता पड़ी थी ? क्या यह सब कहना ठीक है?'' क्रोध से वे न जाने क्या–क्या कहते गए।

क्रोध शान्त होने पर नरेन्द्र ने देखा कि गुरुदेव के नेत्रों से अश्रुधारा बह रही है। शान्त स्वर में रामकृष्ण देव कह रहे थे–''नरेन्द्र तेरे लिए तो मुझे घर–घर जाकर भिक्षा माँगने में भी कोई संकोच न होगा.....।'' नरेन्द्र अवाक् सुन रहे थे और आश्चर्य चकित थे अपने प्रति गुरुदेव के स्नेह को देखकर।

शारदा माँ ने भी दीक्षा ली

विवाह के पूरे तेरह वर्ष बाद, माता की अनुमति से दक्षिणेश्वर तक पैदल आयी अपनी 'पत्नी को देखकर परमहंस श्री रामकृष्ण ने कहा–''भगवति ! अब तो मैं नारी–मात्र को मातृवत् देख रहा हूँ, किन्तु

यदि तुम मुझे पुनः गृहस्थ जीवन के स्वप्नमय जगत में ले चलना चाहती हो, तो मैं तैयार हूँ।''

शारदा देवी उनके चरणों पर सिर नवाकर बोली–''देव ! मुक्त को बंधन की ओर खींचकर मैं कौन सा श्रेय कमाऊँगी ? मुझे दीक्षित कीजिए।

मेरे लिए आप गुरु तुल्य है। परमहंस ने उन्हें आश्रम में रख लिया और देवी के रूप में उनकी उपासना करने लगे।

''विज्ञान अर्थात विशेष रूप से ज्ञान प्राप्त करना। किसी ने दूध का नाम सुना है। पिया ने दूध को देखा भर है किसी ने दूध दिया है। जिसने सिर्फ सुना है, वह अज्ञानी है, जिसने देखा है वह ज्ञानी है और जिसने पिया है, वह विज्ञानी है, विशेष रूप से ज्ञान उसी को हुआ है।''

है कितनी उपकारी माँ

अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो।
है किरानी उपकारी गो।
गाय के दूध से बने दही।
दही से निकले मक्खन घी।
खाकर जिसे बने बलवान।
लड़े शत्रु से सीना तान।
हमसे लड़ ले चाहे जो।
अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो।
है कितनी उपकारी गो।

गाय के गोबर की जो खाद।
करती खेतों को आबाद।
गाऊ मूत्र से कीड़े नष्ट।
करे न पर्यावरण को भ्रष्ट।
तू प्रयोग करके तो देख।
गाय एक है लाभ अनेक।
लाभ उठा ले चाहे जो।
अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो।
है कितनी उपकारी गो।।

गाय का बछड़ा बनता बैल।
बैल के आगे है सब फेल।
खेत जोतता बोता है।
माल हमारा ढोता है।
दाना भूषा खाता है।
डीजल पेट्रोल बचाता है।
बैलट रहट चलाता वो।
अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो।
है कितनी उपकारी गो।।

नथनी

एक बार कबीरदास जी हरि भजन करते एक गली से निकल रहे थे। उनके आगे कुछ स्त्रियाँ जा रही थी। उनमें से एक स्त्री की शादी कहीं तय हुई होगी तो उसके ससुराल वालों ने शगुन में एक नथनी भेजी थी। वह लड़की अपनी सहेलियों को बार–बार नथनी के बारे में बता रही थी कि नथनी ऐसी है वैसी है। ये विशेष उन्होंने मेरे लिए भेजी है। बार–बार बस नथनी की ही बात।

उनके पीछे चल रहे कबीर जी के कान में सारी बातें पड़ रही थीं। तेजी से कदम बढ़ते कबीर उनके पास से निकले और कहा–

नथनी दीनी यार ने, तो चिंतन बारम्बार,
नाक दिनी करतार ने, उनको दिया बिसार।

सोचे यदि नाक ही ना होती तो नथनी कहाँ पहनती ! यही जीवन में हम भी करते हैं। भौतिक वस्तुओं का तो हमें ज्ञान रहता है परन्तु जिस परमात्मा ने यह दुर्लभ मनुष्य देह दी और इस देह से सम्बन्धित सारी वस्तुएं, सभी रिश्ते–नाते दिए, उसी को याद करने के लिए हमारे पास समय नहीं होता।

आराध्य श्री कृष्ण

- देवेन्द्र नाथ तिवारी
पूर्व प्रधानाचार्य

भाद्रपद की अंधेरी रात ! कंस की जेल की सीलन भरी कोठरी, हथकड़ियों और बेड़ियों से जकड़े हुए वसुदेव, प्रसव की वेदना से अचेत हो निष्पाप देवकी! जेल के सीखचोंदार फाटकों पर लटक रहे बड़े–बड़े ताले। सीखचों के उसपार खड़े भयानक चेहरों वाले प्रहरी। सीखचों के उस पार जलती हुई मशालों की रोशनी, जिनका प्रकाश सीलन भरी कोठरी में भी फैला हुआ था। गगन में काले घने बादल। कौधती बिजली की जगमग, कड़कराती आवाज और फिर रहस्यमय खामोशी।

आठवाँ प्रसव होने को है। हथकंड़ी और बेड़ी से जकड़े वसुदेव मन ही मन स्वयं धिक्कार की भावना से सोचते है कि मैं देवकी को क्या दे पाया ? विधाता ने इस जेल में ला पटका। हर बार माँ बनी। स्वप्न चकना चूर हुए। जेल के बारह पानी बरस रहा था। जेल के अन्दर वसुदेव के नेत्र बरस रहे थे।

तभी जेल में दिव्य आभा फैल गई। वसुदेव चौंक उठे। सिर उठा कर देखा तो सामने शंख, चक्र, गदा पद्य लिए महाविष्णु खड़े मुस्करा रहे है। वसुदेव रोये जा रहे हैं। महा विष्णु उन्हें सांत्वना देते है कि भक्त दुःखी मत हो। मैं धरती को असुरों के भार से मुक्त करने के लिए शीघ्र प्रकट होने वाला हूँ। कुछ ही समय के उपरान्त मैं देवकी के आठवें पुत्र के रूप में प्रकट होऊँगा तब तुम मुझे टोकरी में रख कर मुझे नन्द बाबा के यहाँ पहुँचा देना और वहाँ से कन्या के रूप में प्रकट हुई योग माया को ले आना। वसुदेव ने कहा ऐसा ही करूँगा इतना कहते ही विष्णु भगवान अर्न्तध्यान हो गये।

भाद पद कृष्ण पक्ष की रात बारह बजे बाल कन्हैया प्रकट हुए। वसुदेव ने सोचा इन्हें मैं टोकरी में लेकर कैसे जाऊँ ? हाथ पैर जकड़े है फाटक बन्द है। यह विचार कर महा विष्णु का स्मरण किया तभी एक विचित्र लीला हुई। वसुदेव ने देखा कि उनकी हथकड़ी बेड़िया खुल गई। सामने देखा तो फाटक भी खुला है और पहरेदार सो रहे हैं।

वसुदेव बाल कन्हैया को टोकरी में रख सिर पर उठा कर नन्द गाँव की ओर चल दिये। आगे बढ़ने पर यमुना नदी पार करना था। उस समय यमुना का प्रवाह बहुत तेज था। वसुदेव ने यमुना में प्रवेश किया। यमुना की लहरे बाल कन्हैया के चरणों का स्पर्श चाहती थी इस कारण लहरें तेज उठी तभी बाल कृष्ण ने अपना पैर टोकरी से बाहर कर दिया। चरण स्पर्श से यमुना की धारा कम हो गई। वसुदेव जी ने यमुना पार कर नन्द बाबा के यहाँ पहुँचे वहाँ पर दरवाजा खुला था। वसुदेव ने चुपके से बाल कृष्ण को यशोदा के पास लिटा कर योगमाया रूपी कन्या को लेकर मथुरा वापस आ गये। वसुदेव के वापस आते ही फाटक बन्द हो गये, हथकड़ी, बेड़ियाँ लग गई पहरेदार जग गये।

जेल में शिशु रूदना सुनकर पहरेदार जाग गये और कंस को समाचार दिया। कंस तुरन्त जेल में आकर जन्मी कन्या को देखकर उसके पैर पकड़ कर पटकना चाहा, कन्या हाथ से छूट गई, आकाश में जाकर कहाँ ''हे कंस तुम्हें मारने वाला गोकुल में जन्म ले चुका है''।

कंस घबरा गया और बहुत चिंतित हुआ। कंस को महाराज जरासंघ ने बहुत से राक्षस और

राक्षसियाँ देहेज में दिया था। पूंतना उन्ही में से एक थी जो महाराज बलि की कन्या थी जो महा मयावी थी। कंस ने पूतना को बुलाया और उससे कहा कि इस तिथि को जन्मे राज्य के सभी बच्चों को समाप्त कर दो। पूतना बाल कृष्ण को मारने के लिए गई परन्तु बाल कृष्ण ने उसे यमलोक पहुँचा दिया। इसी प्रकार कंस के द्वारा भेजे गये राक्षसों तृणासुर, शकटासुर, अघासुर, बकासुर, धेनुक आदि राक्षसों का अल्प आयु में ही काम तमाम कर दिया।

कृष्ण का जीवन संघर्षपूर्ण रहा। कारा गृह में जन्मे, पैदा होते ही रात में यमुना पार कर गोकुल पहुँचे। तीसरे दिन ही पूतना मारने आ गई। यहाँ से शुरू हुआ, संघर्ष देह त्यागने के पहले द्वारिका डुबोने तक रहा। कृष्ण का जीवन बताता है कि जो भी इस धरती पर आया है उसे संघर्ष तो रहेगा ही। इस लिए जीवन में आने वाली चुनौतियों से निपटना पड़ेगा। कृष्ण ने कहा है कि परिस्थितियों से भागों नही उनका सामना करो क्योंकि कर्म करना मनुष्य का पहला कर्तव्य है। कर्म से ही इन्हे जीता जा सकता है।

श्री कृष्ण ने मनुष्य को नया जीवन दर्शन दिया है। जो जीवन जीने की कला बतलाती है। उनकी जीवन कथा चमत्कारों से भरी पड़ी है। वे परमात्मा है पर उससे पहले सफल गुणवान दिव्य मनुष्य है। कृष्ण का व्यक्तित्व भारतीय इतिहास के लिए ही नहीं विश्व इतिहास के लिए भी अलौकिक एवं अद्भुत है और सदा रहेगा। वे हमारी संस्कृति के एक विलक्षण महानायक है। उनके जीवन की प्रत्येक लीला में प्रत्येक घटना में एक ऐसा विरोधाभास दिखता है जो साधारणतयः समझ में नहीं आता। अजन्मा होकर पृथ्वी पर जन्म लेते है। मृत्युंजय होने पर भी मृत्यु का वरण करते हैं। वे सर्व शक्तिमान होने पर भी जन्म लेते है कंस के बन्दीगृह में यही इनके चरित्र की विलक्षणता है।

भगवान कृष्ण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुरंगी है यानी बुद्धिमत्ता, चातुर्थ, युद्धनीति, आकर्षण प्रेमभाव, गुरुत्व न जाने कितनी विशेषताओं एवं विलक्षणताओं से युक्त थे। वे एक महान क्रातिकारी के रूप में भी जाने जाते है। वे दार्शनिक, चिंतक, गीता के माध्यम से कर्म और सांख्य योग के संदेश वाहक और महाभारत युद्ध के नीति निर्देशक थे किन्तु सरल बृजवासियों के लिए तो वह रास रचैया, माखन चोर, गोपियों की मटकी फोड़ने वाले नटखट कन्हैया और गोपियों के चित चोर थे गीता में कृष्ण ने अर्जुन से कहा जो भक्त मुझकों भावना से भजता है मैं भी उसको उसी प्रकार से भजता हूँ।

श्री कृष्ण ने कर्म के द्वारा परमात्मा तक जाने का रास्ता बतलाया है। उन्होंने यह भी बताया है कि वैराग्य से श्रेष्ठ कर्म ही है। श्री कृष्ण का कहना था कि शान्ति का मार्ग ही विकाय का मार्ग है। इसलिए श्री कृष्ण चाहते थे कि महाभारत का युद्ध न हो। शान्ति दूत बनकर कौरवों के पास गये परन्तु दोनो पक्ष युद्ध के लिए आतुर थे श्री कृष्ण ने युद्ध टालने के अनेक प्रयास किए। शान्ति से सुख मिलता है साधनों से नहीं। इसलिए हमे श्री कृष्ण जी के उपदेशों एवं उनके चरित्र से प्रेरणा लेकर अपने जीवन धन्य बनाएं।

"ॐ नमो भगवतंत वासुदेवाय।।"

अहंभाव छोड़, सहनशीलता अपनाएं, माता-पिता व शिक्षक स्वयं को समझने का प्रयास करें

कलह के कारण केवल जर, जोरू और जमीन (धन, नारी और भूमि) ही नहीं होते हैं। उनकी कोई सीमा नहीं बाँधी जा सकती है। ''कदाचित मन पर आघात होना कलह का प्रमुख कारण है।''

अहं से बचें–आपने ऐसी बात क्यों कहीं ? आपके शब्द हृदय में घाव कर देते हैं। आप बात क्या कहते हैं बाण मारते हैं। आप किसी को कुछ नहीं समझते हैं। आप मेरी भावना को नहीं जानते हैं। आप मुझे बेवकूफ समझते हैं। आप मेरे गुस्से को नहीं जानते हैं। आप मुझ पर सन्देह करके मुझे बेईमान समझते हैं। मेरे चरित्र पर शंका करके मुझे दुष्ट समझते हैं। आपने मेरे सम्बन्ध में उससे ऐसा क्यों कहा ? आप सबके सामने मेरी इज्जत उतार देते हैं। बस बहस शुरू हो गई और दोनों ने मुँह चढ़ा लिया तथा बोलना बन्द कर दिया। अब पहले कौन बोले– ये नई समस्या खड़ी हो गयी। दोनों एक–दूसरे के शत्रु हो गये। मन में दीवार खिंच गयी, फिर मकान में दीवार खिंच गयीं। एक ही उपाय है सहनशीलता, क्षमाशीलता, उदारता और गम्भीरता का।

धैर्य अपनाएं –आवेश के समय लम्बी बहस में न पड़ें। एक का क्रोधावेश देखकर दूसरा शान्त हो जाये। कभी दो मिनट से अधिक क्रोध न करने का और अधिक न बोलने का संकल्प लें। मिथ्या अहंभाव छोड़कर क्षमा मांग लें, क्षमा कर दें। धीरे–धीरे प्रेमपूर्वक समस्या को सुलझा लें। विशेषतः परिवार, पडोस, मित्र मण्डली में जिनके बिना हमारा निर्वाह ही कठिन हो जायेगा, हँसकर और हँसाकर रहना एक कला ही है। नमस्ते अभिवादन जैसी बात के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाना श्रेयस्कर नहीं कि मैं अभिवादन पहले क्यों करूँ ? विषम परिस्थिति बुद्धि के लिए चुनौती होती है। प्रसन्नतापूर्ण वातावरण बना देना आपकी बुद्धि की कुशलता है। दूसरे के स्वभाव को हँसकर सहने की आदत डालना परमावश्यक है। पूर्ण कौन है? हाँ, पूर्णता का प्रयास करना नैतिक धर्म है। श्रेष्ठ व्यक्ति में भी दोष होते हैं, और निकृष्ट व्यक्ति में भी कुछ विशेष गुण होते है।

बुराई व प्रतिशोध की भावना न रखें–भलाई की शक्ति में अटूट विश्वास रखना चाहिए। आप विवेक पूर्ण भलाई करना कदापि न छोड़ें, क्योंकि आपकी भलाई आपकी ही मदद करती है। भलाई करने से मन बलवान होता है। हम भलाई से ही बुराई को जीत सकते हैं, बुराई और प्रतिशोध से नहीं। धोखेबाज से सावधान रहते हुए भी उसके साथ धोखा न करें। क्षमा करें, भलाई करें। संसार भलों की भलाई के सहारे चल रहा है। अच्छे तत्व कभी समूल नष्ट नहीं होते है। बुरे से बुरे और नीच से नीच व्यक्ति में भी कुछ गुण हैं, कुछ भलाई है। बल्ब पर धूल मिट्टी चढ़कर उसके प्रकाश को कम कर देती है। भलाई का प्रकाश लुप्त हो जाने पर तो जीवन ही नष्ट हो जायेगा। बल्ब फ्यूज हो जायेगा। कोई भी मनुष्य पूर्णतः बुरा हो ही नहीं सकता। भलाई का कुछ अंश ही व्यक्ति को जीवित रखता है। अपने मन को स्वच्छ करने पर ही हम दूसरों की भलाई को समझ सकते है। सच्चे अर्थों में जीवित रहने के लिए चालाकी की आवश्यकता नहीं बल्कि भलाई की आवश्यकता है। ध्यान रहे सत्पुरूष अपने प्रति किये हुए उपकार को नहीं भूलते हैं।

छात्र को आत्मसम्मान दें –माता–पिता और गुरूजन प्रायः भूल जाते है कि युग में कितना

परिवर्तन हो चुका है। आज बच्चे और युवक अधिक आत्मसम्मान, अधिक स्वतन्त्रता चाहते हैं। अनुशासन का अर्थ बच्चों को दास बनाना अथवा पत्थर की प्रतिमा की भाँति निर्जीव बनाना नहीं है। उनके स्वभाव और युग के प्रभाव को समझकर उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए माता–पिता और गुरूजनों को अधिक उदार, सहनशील और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। बार–बार बच्चों को रोकना–टोकना और उपदेश एवं आदेश देना उन्हें दुर्बल बना देता है। न्यूनतम आदेश तथा अधिकतम स्वतन्त्रता देनी चाहिए। प्रेम के द्वारा बात समझाना, भले ही उसमें अधिक समय लगे, अच्छा है। दण्ड और भय के द्वारा घरों और विद्यालयों में अनुशासन चलाना मानों शिक्षा के उद्देश्य को भूल जाना है। दण्ड देने का अधिकार उसी को है, जो प्रेम करता है। क्रोधावेश में आकर दण्ड नहीं देना चाहिए। दण्ड– भय दिखाना अथवा दण्ड दे देना–विवश होकर तथा सुधार दृष्टि से ही देना चाहिए। किन्तु प्रायः माता–पिता, गुरूजन एवं अधिकारी आत्म–संयम खोकर अपराध के अनुरूप दण्ड देने के बजाय बच्चों पर अपने क्रोधी स्वभाव की झुंझलाहट उतारते हैं। बड़े भी तो क्षमा का आदर्श रखें। क्षमापूर्ण विशाल हृदय–मानवता का लक्षण होता है। बड़ों की सहनशीलता बच्चों के विकास में सहायक होती है। क्षमाशीलता महानता की परिचायक होती है।

क्षमा में सुधार की क्षमता होती है–अपने बच्चों और शिष्यों से दास भाव की आशा करना अथवा उन्हें निर्जीव पत्थर बना देने का प्रयत्न करना भयंकर भूल है। बच्चों को अपने विचार सामने रखने का पूर्ण अधिकार है। बच्चे अपनी शक्ति और क्षमता के अनुरूप ही विकसित होते हैं न कि माता–पिता इच्छाओं और योजनाओं के अनुरूप इंजीनियर का पुत्र कलाकार हो सकता है, बच्चों की शक्ति और क्षमता के अनुरूप ही सहयोग देना चाहिए। उन पर अपनी इच्छा योजना को लादना उनके साथ अन्याय है। कोई किसी की प्रतिकृति नहीं बन सकता, कोई किसी को अपने जैसा नहीं बना सकता। हम केवल उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं, प्रेरणा दे सकते हैं। माता को पृथ्वी की भाँति पोषक व क्षमाशील, पिता को उच्च एवं विशाल आकाश की भाँति उदारमान, संरक्षक और गुरू को तेजवान सूर्य की भाँति पथ प्रदर्शक होना चाहिए। माता–पिता और गुरु का दायित्व है कि वे आदर्श वातावरण प्रस्तुत करें। वातावरण का मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

प्रोत्साहन को बढ़ावा दें–अच्छा काम करने पर बच्चों को शाबासी देना आवश्यक है। प्रोत्साहन देने से आत्मीयता बढ़ती है। दण्ड व भय से कुण्ठा उत्पन्न होती है, कटुता बढ़ती है तथा प्रेम और क्षमा से सुधार होता है। मन पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। जिन्हें हम सफल नेता, प्रबुद्ध विद्वान अथवा सशक्त क्रीडा–कुशल व्यक्ति बना सकते थे। उन्हें हम दण्ड भय के कारण दब्बू हकलाने वाले, किताबी कीड़ा, विद्रोही, सामाजिक अपराधी, डाकू क्रूर व हत्यारे बना देते है। माता–पिता एवं गुरूजन धैर्य सहानुभूतिपूर्वक एवं प्रेम व क्षमा को धारण करें। यदि बालक को डाटना पड़े तो उसमें भी रस हो, मधुरता टपकती हो। बालक तो श्रद्धा करना जानते है किन्तु माता–पिता और गुरू भी अपने ज्ञान चरित्र और व्यवहार से श्रद्धेय तो बनें।

अपने बनाया है मुझे इस योग्य
की प्राप्त करूं मैं अपना लक्ष्य
दिया है हर समय आपने सहारा
जब भी लगा मुझे, की मैं हारा।।

रक्षा बन्धन

प्राचीन काल से हमारे पूर्वजों ने समाज को स्नेह व एकता के सूत्र में बॉधने एवं समाज के मान बिन्दुओं के संरक्षण हेतु समाज भे विभिन्न पर्व एवं उत्सवों की परम्परा की नीव डाली। उनमें से एक प्रमुख पर्व रक्षा बंधन भी है। यह पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा को प्रति वर्ष मनाया जाता है। यह पर्व ''अत्यन्त कठिन जिम्मेदारी'' को विचार पूर्वक स्वीकार किया गया। इस प्रथा में बहिन भाई के हाथ में रक्षासूत्र बाँध कर स्वयं की रक्षा की कामना करती है और भाई अपनी बहन को रक्षा का वचन पूर्ण करने की स्वीकार करता है। स्नेह बन्धन से बद्ध भाई अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए चाहे जो भी त्याग हो, करने को तैयार रहता है। पुरोहित अपने यजमान को रक्षा बाँध कर उसके सुख–समृद्धि की कामना करते है। रक्षा बंधन के अर्थ को व्यक्त करने वाला निम्न श्लोक प्रसिद्ध है–

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबला ।
तेन त्वां अनुबन्धनानि रक्षे माचल माचल ।।

क्रमशः

रक्षा का यह सूत्र केवल वह भावना नहीं है जो अपने किसी प्रियजन के आत्मसम्मान अथवा समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतीपूर्ण संकट की घड़ी में प्रकट होने वाली भावना है। यह राष्ट्रीय विपत्ति अथवा युद्ध के समय में होमगार्ड अथवा सैनिकों द्वारा आम जनता की रक्षा के लिए खड़े हो जाने के समान नहीं है। यह उससे कहीं अधिक गहरी और सर्वव्यापी है। यह शरीर के विभिन्न अंगों में रक्त प्रवाह के समान है जो शरीर की प्रत्येक कोशिका को शक्ति और पोषण देता है। परिणामस्वरूप, शरीर के किसी भी भाग में होने वाले घाव को शरीर के सभी अंगों द्वारा शीघ्रता से भरा जाता है। शरीर का प्रत्येक अंग उस घाव को भरने के लिए स्वतः रक्त एवं ऊर्जा प्रदान करता है तथा उस अंग को स्वस्थ और शक्तिशाली बनाता है।

इसी तरह समाज भी सभी प्रकार की आन्तरिक और बाह्य चुनौतियों के समक्ष टिका रहकर समृद्धि के पथ पर अग्रसर होता जाता है। विशेषकर राष्ट्र–जीवन में सतत परिवर्तित होने वाले आर्थिक, राजनीतिक और अन्य कारकों से उत्पन्न होनी वाली विषम परिस्थितियों का निराकरण पारस्परिक स्नेह और सौहार्द के अन्तर्प्रवाह की शक्ति से सरलता के साथ हो जाता है। इस भावना से युक्त समाज में उसका प्रत्येक घटक सदैव सुखी रहता है। हिन्दुओं की सदैव यह कामना और आकांक्षा रही है कि –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत ।।

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न रहे, प्रत्येक व्यक्ति समस्त व्याधियों से मुक्त रहे, प्रत्येक व्यक्ति केवल अच्छा देखे और कोई भी व्यक्ति दुःख का भागी न बने।

हिन्दू जीवन की यह अवधारणा अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख की संकल्पना से कहीं अधिक व्यापक है। वस्तुतः समाज के निर्धन और साधनहीन बन्धुओं के प्रति सहज स्वाभाविक स्नेह और सेवा ही ईश्वर की श्रेष्ठतम सेवा मानी गयी है। जरूरतमन्द और वञ्चित लोगों के प्रति निःस्वार्थ समाज सेवा की भावना ही आध्यात्मिक साधना का रूप ग्रहण कर लेती है। श्री रामकृष्ण परमहंस ने 'दरिद्रनारायण' शब्द गढ़ा। वे 'निर्धनों और रुग्णों के प्रति करुणा दिखाना, जैसे शब्दों को सहन नहीं करते थे। एक बार जब वे अर्द्ध–समाधि की अवस्था में थे, उन्होंने कहा ''प्राणियों के प्रति करुणा

भाव ! प्राणियों के प्रति करुणा भाव ! हे मूर्ख ! पृथ्वी पर रेंगने वाले मामूली कीड़े, तुम दूसरों के प्रति करुणा भाव दिखाओगे ! तुम करुणा दिखाने वाले कौन होते हो ? नहीं, यह नहीं हो सकता। यह दूसरों के प्रति करुणा का भाव नहीं है अपितु यह मानव को ईश्वर की प्रतिमूर्ति मानकर उसकी सेवा करना है।'' स्वामी विवेकानन्द ने इस सूत्र को ग्रहण कर लिया और निर्धनों और अज्ञानियों में ईश्वर को देखा और कहा–**दरिद्र देवोभव, मूर्ख देवोभव !**

जब उनका राज्य अकाल की विभीषिका से अत्यन्त गम्भीर रूप में पीडित था और राजा रन्तिदेव ने अपनी प्रजा के मध्य अन्न का आखिरी दाना तक बाँट दिया था और पानी की आखिरी बूंद प्यासे कुत्ते को दे दी थी, उनसे जब ईश्वर ने वरदान माँगने को कहा तो उन्होंने वर माँगा कि

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग ना पुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानाम् प्राणिनामर्ति नाशनम् ।।

अर्थात् ***'हे भगवान न मुझे राज्य की कामना है न स्वर्ग की, न मोक्ष की। मेरी कामना केवल यह है कि दुःखी लोगों के कष्टों को दूर करूँ।''*** जब समाज के सभी बन्धुओं में अपने कम भाग्यवान भाई–बहनों के प्रति इस प्रकार की मनोभावना होगी तभी शक्तिशाली द्वारा निर्बल का शोषण समाप्त होगा। तब बुद्धि और शरीर की शक्ति, भौतिक धन–सम्पदा और प्रभाव की शक्ति का उपयोग दूसरों को ऊपर उठाने और उनकी सेवा के लिए होगा। संस्कृति के एक सुभाषित में कहा गया है कि

विद्या विवादाय धनम् मदाय शक्ति परेशां परपीडनाय।
खलस्य साधौविपरीतम् एतत् ज्ञानाय धनाय च रक्षणाय ।।

दुष्टों के लिए विद्या शुष्क तर्कों के लिए है, संपत्ति अहंकार की तुष्टि के लिए है। शक्ति दूसरों को पीड़ित करने के लिए है परन्तु सज्जनों और सत्पुरुषों के लिए यह लोगों को ज्ञान देने, दान करने और दूसरों की रक्षा के लिए है।

संक्षेप में, रक्षाबन्धन हमें समाज की सेवा और त्याग की वास्तविक भावना को अपने हृदय में पुनर्जाग्रत करने का एक शुभ अवसर प्रदान करता है और इस तरह मानव जीवन की सर्वोच्च आध्यात्मिक पूर्णता का मार्ग प्रशस्त करता है।

सावन

मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा ! सावन क्या होता है ?
मेरी आँखें नम होती हैं
उतर रहे दिन बिसरे भूले
कुछ-कुछ उसको बतलाता हूँ
बागों के आँगन के झूले
मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा ! आँगन क्या होता है ?
वहीं फ्लैट में लेटे लेटे
आतीं याद पुरानी बातें
आँगन का सामूहिक सोना
गरमी की अदहन सी रातें
मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा ! अदहन क्या होता है ?
सुनते ही यादों में महकी
माटी के चूल्हे की रोटी
छौंके हुये चने की खुशबू
बिन परथन की रोटी मोटी
मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा परथन क्या होता है ?
यह कुछ भोले से सवाल है
मगर जवाब कहाँ से लाऊँ
महानगर में बैठते खटते
उसको मैं कैसे समझाऊँ ?
मेरा बेटा पूछ रहा है
पापा सावन क्या होता है ?

सम्मान तक ही सीमित न रहें शिक्षक

कमल कुमार (क्षेत्रीय संयोजक)
शिक्षा परिषद, प० उ०प्र०
ग्रामभारती, पिलखुवा (हापुड़)

देश को सशक्त, समृद्ध और उन्नत राष्ट्र के रूप में निर्माण करने के लिए समाज में राष्ट्रवादी विचार जाग्रत करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में राष्ट्र निर्माण करने के लिए राष्ट्रवादी चिन्तन से युक्त युवा शक्ति को तैयार करना जरूरी है। इसमें मुख्यतः भूमिका शिक्षक और वहाँ के विद्यालय की होती है। छात्रों को राष्ट्रीय गीत गाने, राष्ट्रीय विरासत के प्रति गर्व का अनुभव करने, राष्ट्रीय व्यक्तित्वों के जीवन चरित्र को आत्मसात करने, राष्ट्रीय आपदाओं के समय तत्पर रहने की प्रवृत्ति विकसित करने, राष्ट्र रक्षार्थ हमेशा तत्पर रहने तथा जीवन में कभी राष्ट्र विरोध गतिविधि या राष्ट्र के सम्मान को चोट पहुंचाने वाला आचरण न करने के लिए तैयार करना है।

1- समाज जीवन में नैतिकता आवश्यक-आज वैचारिक प्रबोधन का अभाव सर्वत्र दिखाई पड़ता है। जिसके कारण वैचारिक विद्रूपता व्याप्त होने का संकट उपस्थित होता जा रहा है। आज इस बात की महती आवश्यकता है कि श्रेष्ठ महापुरूषों के विचार छात्रों को हृदयांगम कराये जायें इसकी प्रेरणा दिशा व दृष्टि मात्र शिक्षक ही दे सकता है। शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण करना है। जिसके लिए समाज जीवन में नैतिकता आवश्यक है। कहा भी गया है कि–

"If wealth is lost, Nothing is lost, If health is lost samething is lost and if character is lost, every thing is lost"

प्रमुख गीत की पंक्ति भी निर्दिष्ट करती है "शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी यदि नैतिक आधार नहीं हैं। अर्थात नैतिकता छात्र जीवन में अवश्य ही परिलक्षित हो ।

2- बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार अवसर प्रदान करें- प्रत्येक छात्र कोई न कोई गुण या विशेषता अवश्य रखता है उस पर कार्य कर उनका भविष्य निर्माण हेतु उनकी विशेष रूचि के क्षेत्र में अग्रसर होने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। समाज में अनेक ऐसे खिलाड़ी, राजनेता, व्यवसायी संगीतकार, गीतकार व अनेक नये–नये क्षेत्रों में कार्य करने वाले कामयाब लोग हुए हैं, जिन्हें लिखने–पढ़ने में व गणित, अंग्रेजी सीखने में कठिनाई रही होगी। वर्तमान समय में ऐसे अनेक विकल्प हैं जिनमें सिर्फ क्रियात्मक, सहयोगी भाव होना ही आवश्यक है। किताबी ज्ञान या Pen, Paper, Test से हटकर भी दुनिया है।

जिन छात्रों को पढ़ने या समझने में किसी प्रकार की अक्षमता है उनके शिक्षक व अभिभावक उनको वही विषय पढ़ाने का व अधिक अंक लाने का दबाव न बनाएं। शिक्षक समझदारी के साथ उनकी अभिरूचि को पहचान कर उस पर कार्य करना प्रारम्भ करें। किसी भी प्रकार की सीखने की अक्षमता का अर्थ बौद्धिक अक्षमता नहीं है, बालक एक क्षेत्र को छोड़कर दूसरी क्षेत्र में बुद्धिमान हो सकता है।

3- मन रूपी नदी के प्रवाह में न बहें, दूर दृष्टा बनें- दो दोस्तों के बीच आपस में बड़ा स्नेह था, एक दिन वे खेत पर घूमने के लिए निकले, और विचार करने लगे कि हम एक बड़ी जमीन लें और साझेदारी में खेती करें।

एक दोस्त ने कहा–मैं ट्रैक्टर लाऊंगा, तुम कुँआ खुदवाना

दूसरा दोस्त–ठीक है ट्रैक्टर खराब हो जाये तो मैं बैल रखूंगा।

पहला दोस्त–अगर तुम्हारे बैल मेरे खेत के हिस्से में घुस जायेंगे तो मैं उन्हें मार–मार कर खदेड़ दूंगा।

दूसरा दोस्त – क्यों मेरे बैलों को क्यों खदेड़ोगे ।

पहला दोस्त – क्योंकि वे मेरी खेती को नुकसान पहुंचायेंगे।

इस प्रकार दोनों दोस्तों में कहा–सुनी हो गई और बात बढ़ते–बढ़ते मार–पीट पर पहुंच गई। दोनों ने एक–दूसरे का सिर फोड़ दिया और मुकद्दमा हो गया। दोनों न्यायालय में गये, न्यायाधीश ने पूछा–आपकी लड़ाई कैसे हुई?

दोनों बोले–जमीन के सम्बन्ध में हमारी लड़ाई हुई।

न्यायाधीश – कितनी जमीन ? और कहां ली थी ?

पहला दोस्त–अभी तक ली ही नहीं है।

न्यायाधीश–फिर क्या हुआ?

दूसरा दोस्त–इसके हिस्से में ट्रैक्टर आता था और मेरे हिस्से में कुंआ और बैल।

न्यायाधीश– ट्रैक्टर और बैल कहां हैं ?

दूसरा दोस्त–अभी खरीदे नहीं है।

न्यायाधीश–जमीन खरीदी नहीं, ट्रैक्टर लिया नहीं, कुंआ खुदवाया नहीं, बैलों की व्यवस्था अभी हुई नहीं। मन के द्वारा इस प्रकार से इतना बड़ा झगड़ा खड़ा कर दिया। इस मन को सम्भालो। इसे सम्भालने का काम केवल सक्षम व योग्य शिक्षक ही कर सकता है। बालक का मन सम्भल गया तो वह जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकता है।

The best brain of the nation may be found the last benches of the class room.

4- बालक स्वयं को जाने इसके लिए प्रोत्साहित करना- मैं कौन हूँ? मैं क्यों पढ़ रहा हूँ ? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? किस उद्देश्य को लेकर मैं जीवन जीना चाहता हूँ? इस सब का बोध बालक को शिक्षक ही करा सकता है। आज हम जो भी हैं शिक्षकों के कारण ही हैं जिन्होंने हमें जीवन के मूल्यों को समझाया देश का निर्माण करने में तथा छात्रों को जीवन की दिशा तय करने में शिक्षक की खास भूमिका होती है। शिक्षक के भीतर वह गुरूत्वीय शक्ति होती है जिसके कारण शिष्य शिक्षक की ओर खिंचा चला आता है। इसी शक्ति एवं आत्मीयता के कारण शिष्य संसारिक चुनौतियों पर विजय प्राप्त करता है। छात्र और शिक्षक का सम्बन्ध अदभुत है इसे दोनों के लिए आत्मसात करने की आवश्यकता है।

5. कक्षा कक्ष में शिक्षक हमेशा CAT व 3 H का प्रयोग करें – कक्षा कक्ष को आदर्श कक्षा स्वयं को आदर्श शिक्षक के रूप में खड़ा करने के लिए शिक्षक निम्नवत करने का प्रयास करें–

C = Contect & Eye 2 Eye (Every student)
A = Approch & Student 2 Student (in class room)
T= Talk & Heart 2 Heart- (First 2 Last Student)
3H का प्रयोग – 3H = 3 – Head – Heart – Hand
तीनों ही शब्द महत्वपूर्ण हैं–

Head शिक्षक स्वयं के मस्तिष्क का प्रयोग करते हुए छात्र के मस्तिष्क को Vision देने का कार्य करें। उसके जीवन का Vision (लक्ष्य) क्या है? सहज ही निर्धारित करा सकते हैं।

Heart से शिक्षक आत्मीयता विकसित कर छात्र के हृदय के अन्दर Vision को प्राप्त करने के लिए Passion प्रवाहित करें। तत्पश्चात Hand से Activity कराते हुए जीवन में कुछ कर गुजरने के लिए Pasitive A ction से जोड़ने का प्रयास करें।

Head	Heart	Hand
↓	↓	↓
Vision	Passion	Action

6. खुश होकर पढ़ें और पढ़ायें –शिक्षकों से विनम्रता पूर्वक निवेदन है कि 3P के लिए विकसित कर बढ़ावा न दें। देखने में आता है छात्र भी 3P के लिए पढ़ते हैं और शिक्षक की सारे जीवन 3P के लिए पढ़ाते रहते हैं जो निम्न प्रकार हैं–

3P = Power – Profit – Peace

ये तीनों चीजें ही न शिक्षक को जीवन में प्राप्त होती हैं और न ही छात्र प्राप्त कर पाता है। हाँ ! इतना निशिचित है कि यदि शिक्षक Joyful होकर अपने शिक्षण को गति देते हुए छात्रों को दिशा देगा तो सच में छात्र

और शिक्षक दोनों ही जीवन में Power, Profit व Peace प्राप्त कर सकेंगे।

"शिक्षक खुश रहे और छात्र को खुश रहना सिखाएं।" यदि छात्र खुश नहीं है तो उसकी 90 + की Mark Sheet किसी मतलब की नहीं, यदि शिक्षक खुश नहीं है, प्रसन्न नहीं है, आनन्दित नहीं है तो उसके छात्र के भले ही 90 + लेकर आ जायें किन्तु Joyful नहीं रह सकते। बालक कुछ भी बन जाये, यदि खुश नहीं है तो उसका जीवन भी सफल नहीं है।

7. शिक्षक छात्रों में कांच नहीं हीरे की खोज करें– ऐसे छात्रों का निर्माण न करें जो हर पल, हर–क्षण गरम होता रहे, एक–दूसरे से उलझता रहे। विपरीत परिस्थितियों को सहन न कर सके।

(N.E.P.) National Education Policy को आधार मानकर छात्रों के विकास की दृष्टि से नवाचार को सामने रखकर शिक्षक स्वयं को एवं छात्रों को update व upgrade रखने का सार्थक सफल व परिणामकारी प्रयास सुनिश्चित करे।

Learning to know - upgrade the knowledge
Learning to do - upgrade the Skills
Learning to live together - upgrade the Collaboration
Learning to be - To Enhance the well being as a community of the learners

WHAT IS CURRICULAM AND PEDAGOGY-

1- Curriculam - Morning Assembly से लेकर अवकाश होने तक class room के अन्दर व बाहर करायी जाने वाली विभिन्न गतिविधियां–खेल–कूद, स्काऊट, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिशु सभा, छात्र संसद Quiz एवं Competitions आदि सभी कैरी कुलम हैं।

Curriculam = What to teach
Pedagogy = How to teach

2- Pedagogy - शिक्षण कार्य में प्रक्रिया का विधिवत अध्ययन Pedagogy कहलाता है। इसमें अध्यापन की शैली व नीतियों का अध्ययन किया जाता है। शिक्षक अध्यापन कार्य करता है तो वह इस बात का ध्यान रखता है कि अधिगम कर्ता को अधिक से अधिक समझ में आये। शिक्षण एक सजीव व गतिशील प्रक्रिया है। Pedagogy is the science of teaching. यह चार चीजों से मिलकर बनी है–

1– Teaching Method (शिक्षण विधि)
2– Teaching Strategy (शिक्षण व्यूहरचना)
3– Teaching Theories (शिक्षण सिद्धान्त)
4– Teaching Feed back and Assessment (प्रतिपुष्टि एवं मूल्यांकन)

लक्ष्य है अति दूर दुर्गम मार्ग भी हम जानते हैं।
किन्तु पथ के कण्टकों को, हम सुमन ही मानते हैं।।
ध्येय प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा।
लक्ष्य तक पहुंचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा।।

बालकोना

सत्य के पथ पर चलना सीखें

- ☆ जीवन में वही व्यक्ति शिखर को छू लेने में सफल हो पाता है जो सत्य का सामना कर पाने की क्षमता रखता है। झूठ का सहारा लेकर बढ़ा तो आसानी से जा सकता है पर बाढ़ में इस सहारे से पछतावे के सिवा और कुछ भी हासित नहीं हो पाता।
- ☆ सत्य हमेशा कटु होता है पर इसकी कटुता ही हमें शीर्ष पर आसीन होने का मौका प्रदान करती है। जो व्यक्ति सत्यता का साथ बिना घबराये देने में सक्षम होता है। उसे आलोचनाओं और झूठ का भय कभी नहीं सताता।
- ☆ अगर झूठ आप किसी परोपकार के काम के लिए बोल रहे है तो वह झूठ भी सौ सच के समान होता है। यही झूठ बोलना आदत में शुमार होने लगता है तो उसका परिणाम केवल उस व्यक्ति को ही भुगतना पड़ता है।
- ☆ सत्य सर्वशक्तिमान है उसे कोई छू नही सकता। सत्य की शक्ति से जो वाकिफ हो जाता है उसे झूठ का सहारा लेने की कभी, जरूरत ही नही पड़ती और यही वजह है कि बड़ी से बड़ी मुश्किलें भी सत्य के पथ पर चलने वालों के आड़े नहीं आती।

घोष यह प्रचंड हो..

घोष यह प्रचंड हो, न देश खंड खंड हो,
रगों में राष्ट्रवाद हो, न दानवी प्रमाद हो,
नदी धरा पहाड़ पर, सनातनी प्रसंग हो।
घोष यह प्रचंड हो .....।।
न वस्त्र तार-तार हो, न शील जार जार हो,
भय से मुक्त हो सभी, न मन में हाहाकार हो,
दिखे जो नर पिशाच तो, शीश उसका भंग हो।

दानवी शक्तियां हैं, अभी उफान पर,
कर रही हैं चोट ये, तुम्हारे स्वाभिमान पर,
जगो सपूत भारती, है मां तुम्हें पुकारती,
दिखाओ ऐसी वीरता, कि वीरता भी दंग हो।
घोष यह प्रचंड को ....।।
न मौन तुम रहो अभी, शत्रु के प्रलाप पर,
संतति न शर्मसार हो कल, तुम्हारे आज पर,
रहे जो दस शतक यहां, न फिर से वो प्रपंच हो।

गतिविधियाँ

बालिका विद्यालय में गणित कार्यशाला

दिनांक 31.07.2023 दिन सोमवार को विद्यालय में छात्राओं में गणित के प्रति अभिरूचि बढ़ाने एवं वैदिक गणित का उपयोग सीखने के उद्देश्य से एक 'गणित कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

उक्त कार्यक्रम में अतिथि के रूप में श्रीमती मधुरिमा श्रीवास्तव जी, जो विगत 17 वर्षों से बेसिक शिक्षा विभाग में अपनी सेवाएं दे रही हैं तथा अनेक राजकीय सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं, ने छात्राओं को रोचक एवं गतिविधि आधारित गणित विषय के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि वैदिक गणित से ही आधुनिक गणित का जन्म हुआ है। इसके उपयोग से छात्राएं प्रतियोगी परीक्षाओं में सरलता से सफल हो सकती हैं।

विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार की गणित कार्यशाला से छात्राओं को निश्चित लाभ होगा। उन्होंने मधुरिमा श्रीवास्तव जी का विद्यालय की ओर से आभार व्यक्त किया।

प्रदेश निरीक्षक का प्रवास

जुगल किशोर गोविन्द प्रसाद सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज लहरपुर सीतापुर में अवध प्रान्त के प्रदेश निरीक्षक श्रीमान रामजी सिंह का आगमन हुआ उनके साथ सीतापुर संभाग के संभाग निरीक्षक श्रीमान सुरेश सिंह जी भी उपस्थित रहे दोनों महानुभावों के साथ लहरपुर की तीनों इकाइयों शिशु वाटिका व विद्या मन्दिर के समस्त आचार्यों एवं बहनों की परिचयात्मक बैठक हुई तथा उन्होंने नई शिक्षा नीति के आधार पर सभी आचार्य बंधुओं को पढ़ाने के निर्देश दिए इस बैठक में विद्यालय के अध्यक्ष श्रीमान रामगुलाम जी, प्रबंधक श्री आशीष मेहरोत्रा जी, सह प्रबंधक श्री राजेश्वर रस्तोगी जी तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अनुराग मिश्र जी प्रमुख रूप से उपस्थित रहें।

प्रशिक्षण वर्ग

दो दिवसीय जनपदीय आचार्य प्रशिक्षण वर्ग सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज पाली हरदोई में आयोजित हुआ, हरदोई जिले में संचालित समस्त शिशु/विद्या मन्दिरों के कुल 148 आचार्य प्रधानाचार्य बंधु एवं आचार्या बहनें इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए, सभी ने पूर्ण मनोयोग से प्रत्येक सत्र/कालांश में उपस्थित होकर विषयशः प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपने संबंधित विषय की पाठ्य योजना बनाकर शिक्षण कार्य भी किया।

वर्ग के प्रथम दिवस पर मान्यवर प्रदेश निरीक्षक मिथिलेश कुमार अवस्थी जी एवं जन शिक्षा समिति अवध प्रदेश के सह प्रदेश मंत्री श्रीमान कौशल किशोर वर्मा जी का मार्गदर्शन सभी को प्राप्त हुआ, द्वितीय दिवस के वंदना सत्र पर प्रदेश मंत्री जी का अत्यंत प्रेरणादायक पाथेय सभी ने ग्राह्य किया इसके बाद लखनऊ संभाग के निरीक्षक श्रीमान श्याम मनोहर शुक्ल जी ने सभी को वृहद मार्गदर्शन कर वर्ग के समापन की घोषणा की।

इस अवसर पर मुख्य रूप से विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्रीमान राम नरेश सिंह चौहान, कोषाध्यक्ष श्री राम अग्निहोत्री, जनशिक्षा परिषद हरदोई के सह जिला प्रमुख श्री राम शंकर शुक्ल, हरी बाबू द्विवेदी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद लखनऊ पश्चिम के संगठन मंत्री व विद्यालय के पूर्व

छात्र ऋषभ कात्यागन जी एवं प्रशिक्षण वर्ग की सम्पूर्ण व्यवस्था को सफल बनाने में अपना अमूल्य योगदान देने वाले सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज पाली के समस्त आचार्य बंधु, आचार्या बहनें उपस्थित रहे।

पुस्तक का हुआ लोकार्पण

माधव कुंज स्थित स्थानीय विद्या भारती कार्यालय पर माधव संवाद केन्द्र पर आज 'परिणामोपेक्षी प्रयोग' पुस्तक का लोकार्पण विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के सह संगठन मंत्री श्री यतीन्द्र कुमार शर्मा ने किया। पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री चंद्र प्रकाश द्विवेदी मंत्री भारतीय शिक्षा समिति पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र ने की।

मुख्य अतिथि श्री यतीन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि उद्देश्यपरक पुस्तकें जीवन जीने की कला सिखाती हैं। विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक आदि सभी के लिए पुस्तकों का स्वाध्याय अत्यंत कल्याणकारी है। स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ानी चाहिए, इसके लिए विद्यालयों से ही प्रयोग शुरू करने होंगे। विद्या भारती ब्रज प्रदेश के संगठन मंत्री श्री हरी शंकर ने पुस्तकों की गुणवत्ता पर प्रकाश डाला।

सरस्वती विद्या मंदिर ब्रज प्रदेश प्रकाशन के निदेशक डॉ. राम सेवक ने कहा कि पुस्तक लेखन एक साधना है, इसमें लेखक का चिंतन, तपस्या, स्वाध्याय की प्रवृत्ति, दिशा– दृष्टि, मनोदशा, लेखनकौशल आदि अनेक बातें समाहित होती हैं।

परिणामोपेक्षी पुस्तक राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित पूर्व प्रधानाचार्य (श्रीजी बाबा सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मथुरा) डॉक्टर अजय शर्मा के अनुभूति प्रयोग पर आधारित कथ्य शैली में लिखी हुई एक अनोखी पुस्तक है। डॉ. अजय शर्मा ने इस पुस्तक का प्रणयन बहुत ही कुशलता से किया है।

- परिणामोपेक्षी प्रयोग की भूमिका डॉ. कृष्ण गोपाल शर्मा सह सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने लिखी है।
- पुस्तक में लेखक डॉ. अजय शर्मा द्वारा 35 वर्ष तक श्री जी बाबा सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मथुरा में किए गए अनेक प्रयोग उल्लिखित हैं।
- पुस्तक का प्रकाशन सरस्वती विद्या मंदिर ब्रज प्रदेश प्रकाशन माधव कुंज मथुरा ने किया है।
- पुस्तक छात्र–छात्राओं, अध्यापकों और अभिभावकों के लिए उपयोगी है।
- शिक्षाविद् लज्जाराम तोमर को समर्पित पुस्तक के सैद्धांतिक, क्रियात्मक, मनोवैज्ञानिक 24 आलेखों को कथ्य शैली में लिखा गया है।

स्वास्थ्य परीक्षण

दिनांक 17.08.2023 को सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज बांदा में पूर्व छात्रा परिषद द्वारा आयोजित छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया। इस कार्यक्रम में डॉक्टर हरदयाल, डॉक्टर पवन विश्वकर्मा अनुश्रवण मूल्यांकन अधिकारी श्री नरेन्द्र मिश्रा सी0एच0ओ0 श्री धीरज गुप्ता एवं फार्माशिष्ट प्रीतेश भारत मिश्रा की टीम द्वारा 200 छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया जिसके अंतर्गत नेत्र परीक्षण, हीमोग्लोबिन, ब्लडप्रेशर तथा वजन आदि का परीक्षण किया गया। जिसमें सबसे अधिक समस्या पेट दर्द की सामने आयी जिसका कारण फास्ट फूड का सेवन करना है। डॉक्टर हरदयाल ने छात्राओं को तीन तरह के स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक स्वास्थ्य आदि के बारे में जानकारी प्रदान की।

डॉक्टर नरेन्द्र मिश्रा ने सांस सम्बन्धी बीमारियों से बचाव के लिए नियमित रूप से अनुलोम विलोम करने की सलाह दी तथा छात्राओं को फास्ट फूड न लेकर संतुलित आहार लेने की सलाह दी।

अन्त में विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अमिता सिंह ने स्वास्थ्य परीक्षण टीम का अपना अमूल्य समय विद्यालय को देने के लिए एवं छात्राओं का परीक्षण करनें के लिए आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

स्वतन्त्रता दिवस

प्रोफेसर राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) सरस्वती शिशु मंदिर मामपुर बाना बीकेटी लखनऊ मे 77 वें स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय यतीन्द्र जी (अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री,विद्या भारती) द्वारा ध्वजारोहण एवम आम्रफल का वृक्षारोपण किया गया। मुख्य अतिथि महोदय द्वारा ज्ञान की देवी मां सरस्वती व भारत माता के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्पार्पण किया गया। इस शुभ अवसर पर विद्यालय के अध्यक्ष आदरणीय श्री विजय शर्मा जी तथा माननीय प्रबन्धक श्री सत्यानन्द पाण्डेय जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। बीकेटी के वर्तमान माननीय नगर पंचायत अध्यक्ष तथा पार्षद श्री गणेश रावत जी व अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे। विद्यालय के प्रधानाचार्य जी द्वारा अतिथियों का स्वागत अंग वस्त्र भेंट कर किया गया। तत्पश्चात विद्यालय के नन्हे मुन्ने भैया बहनों द्वारा देश भक्ति व रंगारंग कार्यक्रम का प्रदर्शन किया गया। मुख्य अतिथि महोदय ने उन सभी वीर जवानों को याद किया जिन्होंने स्वतंत्रता की इस लड़ाई में अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया था। माननीय मुख्य अतिथि महोदय ने उपस्थित सभी भैया बहनों से सीधे संवाद स्थापित करते हुए उनका देश हित में अपना अमूल्य योगदान देने हेतु आह्वान किया।

बालिका शिक्षा प्रमुख बैठक

दिनांक 08 एवं 09 अगस्त, 2023 को विद्यालय में दो दिवसीय प्रान्तीय बालिका शिक्षा प्रमुख बैठक आयोजित की गई। उद्घाटन सत्र का शुभारम्भ मा. रेखा चूड़ा समा जी (अखिल भारतीय बालिका शिक्षा प्रमुख) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वन्दना से हुआ बैठक को सम्बोधित करते हुए मा. रेखा चूड़ा समा जी ने बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने पर प्रकाश डाला। 25 वर्ष बाद हमारा भारत कैसा होगा उसका आधार हमारी आज की बालिकाएं ही हैं। इसलिए उनका दृष्टिकोण प्रारम्भ से ही विकसित करना हमारा मूल उद्देश्य होना चाहिए। कार्यक्रम की प्रस्तावना मा. उमाशंकर मिश्र जी (बालिका शिक्षा प्रभारी) ने रखी।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में मा. हेमचन्द्र जी क्षेत्रीय संगठन मंत्री ने हमारी भारतीय संस्कृति की रक्षा कैसे करनी है और बालिकाओं को बालिका होने पर गर्व होने का भाव जागृत कराने की आवश्यकता है, इन बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। साथ ही यह बताया कि बालिकाओं में समर्पण भाव होना चाहिए तथा किशोरी विकास वर्ग तथा सरस्वती यात्रा के द्वारा अनुभव आधारित शिक्षा देनी चाहिए।

कार्यक्रम के दूसरे दिन दिनांक 09 अगस्त 2023 को तृतीय सत्र में मा. रेखा चूड़ा समा जी द्वारा बालिकाओं के व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु योजना निर्मित हुई, जिसमें बालिकाओं में नैसर्गिक, मनोवैज्ञानिक, भावात्मक और संस्कारों से निर्मित गुणों का विकास पर बल देने को बात कही गई।

चतुर्थ सत्र में मा. रेखा चूड़ा समा जी एवं डॉ. अर्चना अवथी जी (क्षेत्रीय बालिका शिक्षा प्रमुख) के मार्गदर्शन में बालिका शिक्षा एवं बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के संदर्भ में विस्तृत परिचर्चा हुई।

पंचम सत्र में मातृ पुत्री विचार गोष्ठी आयोजित हुई जिसमें मा. रेखाचूड़ा समा जी ने अपने

उद्‌बोधन में बालिका शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्ता पर बल दिया एवं वर्तमान समय में बालक–बालिकाओं में संस्कारों की कमी पर चिन्ता प्रकट की। इस सत्र में माता तथा पुत्री के वैचारिक सम्बन्धों में मतभेद दूर करने से सम्बन्धि अनेक प्रश्न पूछे गए, जिनका निराकरण सम्मानित मंच के महानुभावों द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि छात्राओं को केवल शिक्षा नहीं वरन संस्कारवान शिक्षा देना नितान्त आवश्यक है। उन्होने माताओं से आहवाहन किया कि यदि आप निश्चय कर लें तो निश्चित रूप से शिवा जी, लक्ष्मीबाई के समान सन्तानों का निर्माण कर सकती है।

वार्षिक कार्य योजना सम्पन्न

सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामबाग बस्ती में चल रही विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश के शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय बैठक का आज समापन हो गया। मंच पर विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हेमचन्द्र जी. क्षेत्रीय शारीरिक प्रमुख श्री जगदीश जी तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोविन्द सिंह जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इसके पूर्व कार्यक्रम का प्रारंभ मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन, पुष्पार्चन एवं वन्दना से हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोविंद सिंह जी ने अतिथि परिचय कराया। अतिथियों का अंगवस्त्र एवं स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया गया।

सभी प्रांतों के शारीरिक प्रमुख आचार्यों ने वर्तमान सत्र में विद्यालयों में वर्ष भर होने वाली शारीरिक एवं खेल गतिविधियों के लिए योजना वृत्त प्रस्तुत किये।

अपने उद्‌बोधन में विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री हेमचन्द्र जी ने शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग की वर्तमान बैठक की समीक्षा की और कहा कि सभी विद्यालयों तक ये योजना पहुँचनी चाहिए। सूर्य नमस्कार प्रतिदिन सही स्थिति में होना चाहिए। मासिक, साप्ताहिक व दैनिक योजना बनाकर उनका क्रियान्वयन भी करना चाहिए। खेलों का निरंतर अभ्यास भी हो तथा विद्यालयों में वार्षिक खेल समारोह भी होना चाहिए। हमे आशा है कि ऐसा करने से हम अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे।

लोकार्पण कार्यक्रम

दिनांक 08 अगस्त 2023 दिन मंगलवार को सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज निराला नगर लखनऊ विद्यालय में आर्यभट्ट संगणक प्रयोगशाला का लोकार्पण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मा0 आनंदीबेन पटेल राज्यपाल उ० प्र०, कार्यक्रम की अध्यक्ष माननीय श्रीमती सुषमा खर्कवाल जी, विशिष्ट अतिथि मा० यतीन्द्र जी शर्मा विद्या भारती, अखिल भारती सहसंगठन मंत्री, मा० हेमचन्द्र जी क्षेत्रीय संगठन मंत्री, मा० हरेन्द्र श्रीवास्तव अध्यक्ष भारतीय शिक्षा समिति दीप प्रज्ज्वलित कर माँ सरस्वती, भारतमाता व ऊँ के चित्र पर पुष्पार्चन किया। छात्रों द्वारा दीपमंत्र के बाद सरस्वती वन्दना स्वर लय ताल के साथ सम्पन्न हुई।

50 कम्प्यूटर की आर्यभट्ट संगणक प्रयोगशाला का लोकार्पण मा० राज्यपाल आनंदीबेन पटेल द्वारा क्लिक दबाकर किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय की बहिनों द्वारा मनमोहक ढ़ंग से राष्ट्रभक्ति गीत व हम बेटी भारतवर्ष की आकर्षक गीत प्रस्तुत किया। उसके बाद मा० यतीन्द्र शर्मा जी ने विद्या भारती व सरस्वती शिशु/विद्या मन्दिर निराला नगर, की विशिष्ट कार्य पद्धति पर प्रकाश डाला। मा० महापौर श्री सुषमा खर्कवाल जी ने अपना अध्यक्षीय प्रेरक भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अतिथि मुख्य माननीया श्री आनंदीबेन पटेल जी ने अनेक प्रेरक बातों को प्रस्तुत करते हुये विद्यालय के छात्र छात्राओं व अभिभावकों का मार्गदर्शन किया।

माँ सरस्वती की मूर्ति प्रतिष्ठा

माँ सरस्वती की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा 40 वर्षों के बाद विद्यालय में हुई। मन्दिर निर्माण में दानदाता एडवोकेट मिंटू सिंह भाटी एवं सांसद प्रतिनिधि श्री सोनू एवं दिल्ली हाई कोई के एडवोकेट श्री राजेश्वर जी गुप्ता ने सहयोग दिया। आचार्या दीदी वंशिका के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। रात्रि काल में सुन्दर कांड का पाठ सेवा समिति दनकौर के द्वारा हुआ।

इस अवसर पर नगर चेयर मैन पुत्र श्री दीपक सिंह पर्यावरण समाज देवी युवा नेता एडवोकेट श्री गौरव नागर श्री रमेश चन्द्र जी एवं बेढ़वती आदि उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य देवदत्त शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

स्वराज्य का प्रतीक स्वतन्त्रता दिवस

कृष्णचन्द्र गान्धी सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज मथुरा में देश की एकता, अखण्डता एवं पंथ निरपेक्षता का प्रतीक हमारा राष्ट्रीय पर्व स्वतन्त्रता दिवस समारोह विद्यालय प्रांगण में छात्रों, अभिभावकों एवं आमन्त्रित गणमान्य अतिथियों के मध्य उत्साहपूर्वक मनाया गया ।

ध्वजारोहण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व ऊर्जा मन्त्री श्री रविकान्त गर्ग एवं कार्यक्रम अध्यक्ष शिक्षा कायाकल्प न्यास के सदस्य श्री अनिल कुमार अग्रवाल तथा विशिष्ट अतिथि प्रमुख व्यवसायी एवं समाजसेवी श्री पंकज गुप्ता के करकमलों द्वारा हुआ।

इस अवसर पर विद्या मन्दिर के यशस्वी प्रधानाचार्य हुकमचन्द चौधरी एवं प्रबन्धक कीर्तिमोहन सर्राफ, ब्रज बाल कल्याण समिति के मन्त्री प्रदीप अग्रवाल एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रान्त सम्पर्क प्रमुख श्री कैलाशचन्द अग्रवाल, रामप्रकाश अग्रवाल, मानकचन्द माहौर आदि की सहभागिता प्रमुख रूप से रही। स्वराज्य के अमृत महोत्सव की पुण्य वेला में आयोजित स्वतन्त्रता दिवस समारोह छात्रों के अन्तःकरण में देशभक्ति, राष्ट्रभाव, नवस्फूर्ति एवं नवचेतना जागृत करके राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुरेश कुमार एवं अमृत सिंह ने संयुक्त रूप से किया।

रक्षा बन्धन कार्यक्रम

दिनांक 26.08.2023 को विद्यालय ने छात्राओं तथा आचार्या को एस.एस.बी. कैम्प फर्टीलाइजर ,गोरखपुर में राखी समारोह कार्यक्रम के हेतु भेजा गया। विद्यालय की छात्रा बहनों ने देश पर अपनी जान कुर्बान करने को तैयार ,सरहद पर चौबीस घंटे हमारी सुरक्षा हेतु डटे रहने वाले सैनिको की कलाई पर हस्तनिर्मित राखी बांधी ,साथ ही साथ उनकी लम्बी उम्र की कामनी की । एस.एस.बी. के डी.आई.जी. राजीव राणा एवं जवानों को राखी बांधी तो जवान भी भावुक नजर आए। राखी बांधकर उन्होनें उनके स्वस्थ रहने की कामना की । देशभक्ति गीत,नृत्य भी प्रस्तुत किया। डी० आई० जी ०द्वारा विद्यालय को ट्राफी प्रदान की गई।

77 वॉ स्वतंत्रता दिवस

गनेरीवाल सरस्वती शिशु मन्दिर बृन्दावन मथुरा में 77 वॉ स्वतंत्रता दिवस बड़े ही धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विद्यालय के माननीय अध्यक्ष प्रो०के०एम अग्रवाल, व्यवस्थापक ठा० कालीचरन सिंह, कोषाध्यक्ष श्री हरिदास अग्रवाल एवं प्रबंध समिति, नगर के गणमान्य अतिथि ब्रजेन्द्र कुमार तिवारी, मोहनलाल जी आदि ध्वजारोहण में सम्मिलित हुए। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवीप्रसाद चतुर्वेदी ने स्वतंत्रता दिवस के बारे में विस्तृत रूप से बताया। कार्यक्रम के अन्त में अध्यक्ष महोदय ने सभी को आशीर्वाद दिया एवं व्यवस्थापक जी ने सभी आगुन्तक महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

हमारे विभिन्न कार्यक्रम

डाक पंजी. क्र.: **S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023**
प्रेषण डाकघर–रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि– **5,6,7,8**

हमारे विभिन्न कार्यक्रम

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स–**22**, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ– **226020**, सम्पादक **:** उमाशंकर मिश्र।
प्रकाशन तिथि : **01.08.2023**